

VOLUME-3

ISSUE-2

EMERGING RESEARCH JOURNAL

December-2018



VOLUME - 3
ISSUE - 2
December - 2018

ISSN No. : 2456-2424

EMERGING RESEARCH JOURNAL

MULTIDISCIPLINARY INTERNATIONAL REFERRED JOURNAL

JABALPUR PUBLIC COLLEGE

RUN BY SHIV NARAYAN FOUNDATION

49, Karmeta, Patan Road, Ahead of Radio Station
Near MPSRTC Depott, Jabalpur (M.P.)

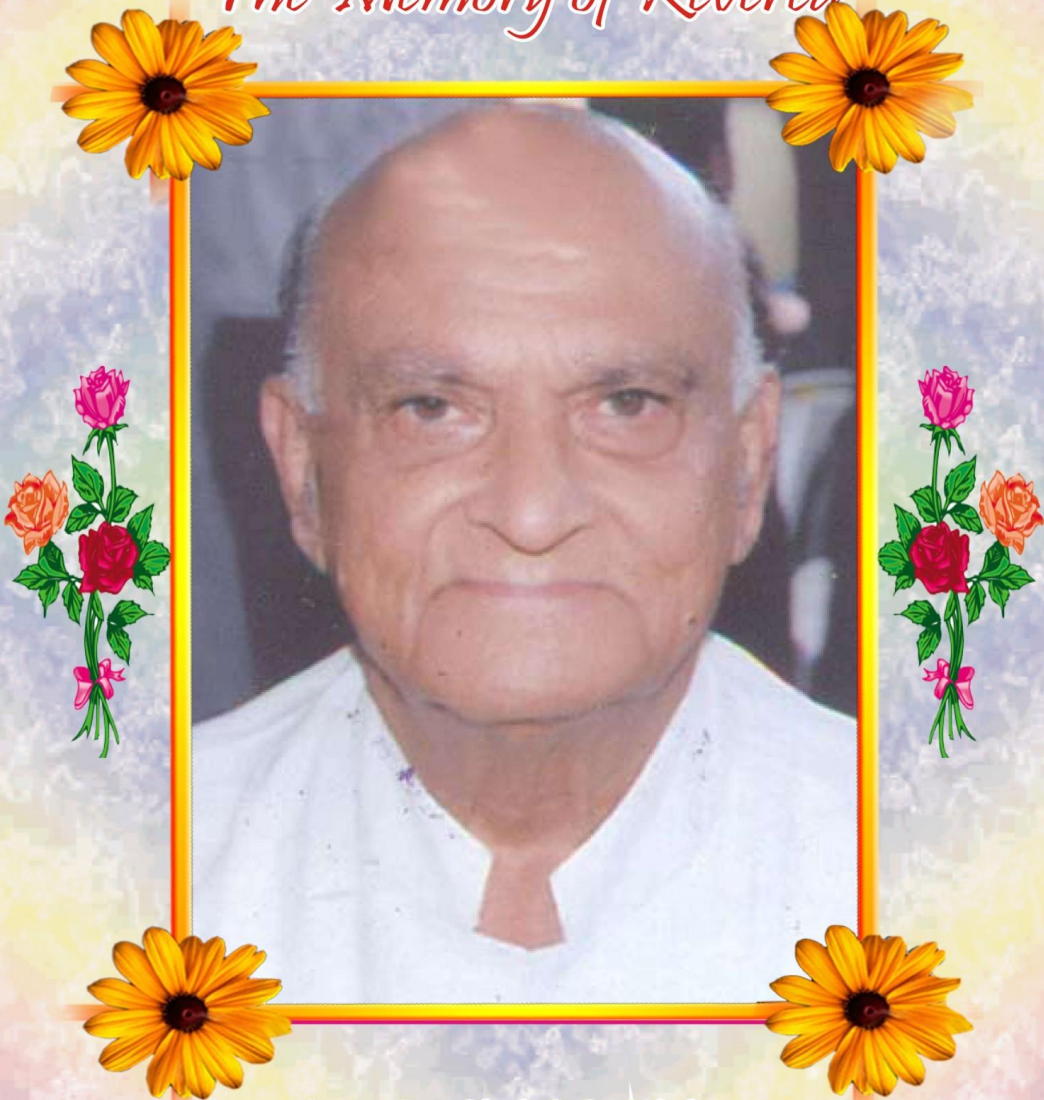
E-mail : erj.jpc@gmail.com

Website : www.erjjpc.org.in, www.jpc.org.in



LATE SHRI SHIV NARAYAN VERMA

*This Edition Is Dedicated To
The Memory of Revered*



Late Dr. Shri G.S. Mishra



ISSN No. : 2456-2424

Emerging Research Journal

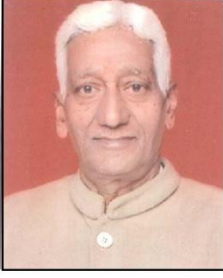
Vol. - 3

Issue - 2

December 2018

A Multi-Disciplinary International Research Journal

Emerging Research Journal is a high quality Journal devoted to the field of science, social science, education, commerce & Management. "Emerging research Journal" is an official Publication of the national society of Shiv Narayan Foundation. The Journal publishes original records, review articles, short communications, scientific survey, etc. Emerging Research Journal provides a forum for all above disciplines for development and research techniques and produces of laboratory investigations. It aims to Provide a highly readable and valuable addition to the literature which will serve as an indispensable reference for years to come. The Journal's core aims therefore, is to provide a platform for the researchers, scholars and research findings with the rest of the world there by facilitating informed decision which will improve society as a whole.

**डॉ. पी.एल. मिश्र**

पूर्व प्राचार्य - शास. शिक्षा महाविद्यालय (PSM)

जबलपुर म.प्र.

पूर्व समन्वयक-एड्युसेट परियोजना

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू)

नई दिल्ली

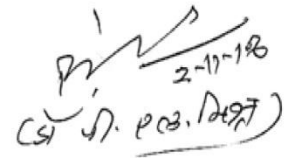
अध्यक्ष - अध्यापक शिक्षा परिषद (CTE) म.प्र. शाखा

शुभकामना संदेश

हर्ष का विषय है कि जबलपुर पब्लिक कॉलेज द्वारा प्रकाशित Emerging Research Journal अब नवशोधार्थियों के लिये प्रकाश स्तम्भ की तरह है। मध्यप्रदेश के शैक्षिक क्षितिज पर कीर्तिमान स्थापित करते हुये यह बहुविषयी अन्तर्राष्ट्रीय शोध जर्नल अपनी विकास यात्रा में नये सोपान सृजित करेगा ऐसी मनोकामना है।

शोधार्थियों, शिक्षा विशेषज्ञों एवं प्रकाशन समितियों के सभी सदस्यों को साधुवाद।

रिसर्च जर्नल के सतत् प्रकाशन एवं महाविद्यालय की प्रगति के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित हैं।


2-11-18
(डॉ. पी. एल. मिश्र)

PATRONS

Shri Praveen Verma
Director, Jabalpur Public College
Jabalpur, (M.P.)

Dr. Kapil Dev Mishra
Vice Chancellor, RDVV
Jabalpur (M.P.)

Dr. Balbir Singh
USA
bsingh1932@msn.com

Father G.V. Vazhan Arasu
Principal, St. Aloysius College,
Jabalpur (M.P.)

Prof. S.K. Mehta
Retd. Professor
SISE, Jabalpur (M.P.)

Mr. G.K. Judah
Retd. Principal
Christian H.S. School
Jabalpur (M.P.)

EDITOR IN CHIEF

Shri Bhupendra Nigam

EDITOR

Dr. Nivedita Paul

MANAGING EDITORS

Dr. Chitranshi Verma

Dr. P.L. Mishra

Dr. Shweta Pandey

Smt. Meenakshi Shrivastava

Smt. Priyanka Tamrakar

ADVISORY BOARD

Dr. K.M. Bhandarkar, Gondia (M.H.)

Dr. Nilima Bhagwati, Assam

Dr. V.K. Gupta, Kurukshetra, (Haryana)

Dr. K.K. Sharma, Kurukshetra, (Haryana)

Dr. V.M. Shashi Kumar,
Thiruvananthapuram, Kerala

Dr. Alka Nayak, Ex. Vice Chancellor
RDVV, Jabalpur (M.P.)

Prof. B.K. Sahoo, Dean Faculty of Education,
RDVV, Jabalpur (M.P.)

Dr. Susamma Johnson,
Jabalpur (M.P.)

Dr. Damodar Jain, Bhopal (M.P.)

Dr. S.D. Singh, Mathura (U.P.)

Dr. Sunil Pahwa, Jabalpur (M.P.)

Dr. Ashutosh Dubey, Jabalpur (M.P.)

Dr. Prem Khatri, Nepal

Dr. Bhawana Soneji, Jabalpur (M.P.)

Dr. Arun Shukla, Jabalpur (M.P.)

Dr. Sudha Dwivedi, Jabalpur (M.P.)

Dr. Raina Tiwari, Jabalpur (M.P.)

Dr. Rashmi Singh, Jabalpur (M.P.)

DISCLAIMER

The authors are solely responsible for the contents of the papers compiled in this volume. The publishers, Editors in Chief and the members of the Editorial Board do not take any responsibility for the same in any manner. Errors, if any, are purely unintentional & readers are requested to communicate such errors to the editors or publishers to avoid discrepancies in future.

अनुक्रमणिका

क्र.		पेज नं.
	शिक्षा / Education	
1.	श्रीमती बेलामैरी जोसफ / श्रीमती भावना सोनेजी मॉयल श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों के सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन	1-4
2.	मनीषा श्रीवास्तव सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों पर व्यावसायिक दबाव का अध्ययन	5-8
3.	श्रीमति सुजाता घोष उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा केन्द्र एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन	9-13
4.	Jaya Chaturvedi Higher Education System in India	14-19
5.	Dr. Kuldeep Kaur Juneja Cognitive Instructional Approach with ICT in Learning English Vocabulary	20-26
6.	Sharafat Ali Khan E-Governance, its Role in the Process of Modernization in Education System	27-31
7.	Imtiyaz Ahmad Ahangar Role of ICT's in Education System, Its Rights And Responsibilities	32-36
	संगीत / Music	
8.	डॉ. एडलिन अब्राहम संगीत का रूपायन-लघु चित्रण परम्परा	37-42

9. श्रीमती दीपमाला देशराज 43-46
संगीत का मानव जीवन पर प्रभाव
'स-उत्तम'
'गीत-गायन'

हिन्दी / Hindi

10. डॉ. कैरोलिन सेनी 47-53
कार्यालयीन कार्यविधि-प्रयोजन मूलक हिन्दी

राजनीति शास्त्र / Political Science

11. श्रीमती प्रतिभा पाण्डे 54-58
सामंतवाद

मॉयल श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों के सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती बेलामैरी जोसफ *

श्रीमती भावना सोनेजी **

शोध सार

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य मॉयल श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों के सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन करना। अध्ययन में मॉयल (मैंगनीज ओर इण्डिया लिमिटेड) बालाघाट जिले के (200 छात्र 200 छात्राओं) को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। अध्ययन में सामाजिक-आर्थिक मापनी- श्री एल.एन. दुबे एवं श्री प्रो. भूपेन्द्र निगम एवं सृजनात्मकता मापनी बॉकर मेंहदी का उपयोग किया गया। आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के लिए क्रान्तिक अनुपात का उपयोग किया गया। शोध परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर का सृजनात्मकता के कारक धारा प्रभावशीलता, लचीलापन, मौलिकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव बालक के सामाजिक विकास पर कई रूपों में पड़ता है, जैसे उनके रहन-सहन, शिक्षा, खेलकूद, आस-पड़ोस, खान-पान तथा विभिन्न प्रकार की गतिविधियों पर पड़ता है। उनके सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर समाज को मुख्य तीन वर्गों में विभाजित किया जाता है, जैसे- उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग। उच्च वर्ग के परिवारों का सामाजिक स्तर उच्च स्तर का होता है जिससे वे अपने बच्चों का पालन-पोषण अच्छे रीति से करते एवं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। शिक्षा का स्तर भी उच्च रहता है इसलिए उनका समायोजन एवं सृजनात्मकता भी उच्च स्तर की होने की संभावना रहती है। उनके परिवारों में शिक्षा, मनोरंजन के पर्याप्त अवसर मिलते हैं जिनके कारण उनमें सृजनात्मकता का विकास अच्छा होता है किन्तु निम्न सामाजिक-आर्थिक के परिवारों में यह स्तर कम दिखाई देता है। निर्धन परिवारों में बच्चों को पौष्टिक भोजन, शिक्षा एवं मनोरंजन के उत्तम साधन नहीं मिल पाते हैं, अतः उनका व्यक्तित्व संकुचित होकर रह जाता है, उनमें हीनता की भावना उत्पन्न हो जाती है, वे किसी नये कार्यो को करने का साहस नहीं कर पाते हैं, जिससे उनमें सृजनात्मकता के विकास की संभावना भी कम होती है। प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में सामाजिक-आर्थिक स्तर का मुख्य स्थान होता है। अनेक अध्ययनों द्वारा मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है- गोपाल, टी. वेनू राय तथा डॉ. सत्यपाल (2011) ने अपने शोध के परिणामों से यह स्पष्ट किया है कि यदि माता-पिता का उच्च स्तर के व्यवसाय एवं शिक्षा से संबंध है तो ऐसी स्थिति में उनके बालक-बालिकाओं की सृजनात्मकता भी उच्च श्रेणी की होती है। उसी प्रकार अमीर फौरौगी एवं अन्य साथियों (2013) ने अपने शोध में उभरते किशोरों की सामाजिक-आर्थिक स्तर का रचनात्मकता पर सकारात्मक सह-संबंध बताया। अतः आवश्यक हो जाता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों पर सृजनात्मकता के प्रभाव का अध्ययन किया जाये।

उद्देश्य :- श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों की सृजनात्मकता के कारक धारा प्रभावशीलता, लचीलापन एवं मौलिकता पर प्रभाव का अध्ययन।

*सहायक प्राध्यापक, बालाघाट स्नातक कॉलेज, बालाघाट

**प्राचार्य, राधाकृष्णन कॉलेज करमेता, जबलपुर (म.प्र.)

परिकल्पना :- श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का उनके बच्चों की सृजनात्मकता के कारक धाराप्रवाहशीलता, लचीलापन एवं मौलिकता पर सार्थक प्रभाव नहीं होता है।

न्यादर्श :- प्रस्तुत शोध कार्य हेतु न्यादर्श को निम्नानुसार लिया गया है:-

तालिका क्रमांक-1

प्राथमिक न्यादर्श

समूह	संख्या
छात्र	200
छात्राएँ	200
कुल	400

उपरोक्त न्यादर्श पर सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी का प्रशासन एवं फलांकन कर अंतिम न्यादर्श निम्नानुसार चयनित किया गया है।

तालिका क्रमांक-2

सामाजिक-आर्थिक स्तर	समूह	संख्या
उच्च	छात्र	50
	छात्राएँ	50
निम्न	छात्र	50
	छात्राएँ	50
	कुल	200

उपकरण :- प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नांकित परीक्षणों का उपयोग किया गया है-

- (1) सामाजिक-आर्थिक स्तर मापनी-श्री एल.एन दुबे एवं प्रो. भूपेन्द्र निगम
- (2) सृजनात्मक चिन्तन क्षमता (शाब्दिक) परीक्षण- डॉ. बॉकर मेंहदी

शोध विधि :- शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

विधि :- प्रस्तुत शोध में बालाघाट के माँयल खदान में स्थित विद्यालयों के 200 छात्र एवं 200 छात्राओं पर सामाजिक-आर्थिक मापनी को प्रशासित किया गया। फलांकन के उपरांत उच्च एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को छोटकर उन पर बॉकर मेंहदी द्वारा निर्मित सृजनात्मकता चिंतन (शाब्दिक) परीक्षण का प्रशासन किया गया। फलांकन के उपरांत प्राप्त प्रदत्त का विश्लेषण किया गया।

परिणामों के विश्लेषण एवं व्याख्या :- परिणामों को निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

तालिका क्रमांक-3

छात्र-छात्राओं के सृजनात्मकता के कारक - धाराप्रवाहशीलता, लचीलापन, मौलिकता पर सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव संबंधी परिणाम

सृजनात्मकता के कारक	समूह	सामाजिक-आर्थिक स्तर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक मान	पी मान
धाराप्रवाहशीलता	छात्र	उच्च	50	41.10	8.10	4.46	<0.01
		निम्न	50	33.68	8.54		
	छात्राएँ	उच्च	50	52.12	11.69	6.74	<0.01
		निम्न	50	37.90	9.26		
लचीलापन	छात्र	उच्च	50	31.36	6.62	3.54	<0.01
		निम्न	50	26.02	8.35		
	छात्राएँ	उच्च	50	39.49	8.25	6.69	<0.01
		निम्न	50	29.06	7.65		
मौलिकता	छात्र	उच्च	50	12.36	7.23	5.76	<0.01
		निम्न	50	4.76	5.58		
	छात्राएँ	उच्च	50	24.04	9.85	7.36	<0.01
		निम्न	50	10.60	8.25		

स्वतंत्रता के अंश-98

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 2.63

0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु मान 1.98

व्याख्या :- प्रस्तुत शोधकार्य में श्रमिकों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का सृजनात्मकता के कारक धाराप्रवाहशीलता, लचीलापन, मौलिकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है (तालिका क्रमांक-3)। उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर के समूहों के क्रान्तिक मान निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्रों की अपेक्षा अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि बालक-बालिकाओं के सम्मिलित समूह की सृजनात्मकता के कारक - धाराप्रवाहशीलता, लचीलापन एवं मौलिकता पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का सार्थक प्रभाव पड़ता है। एक सामान्य सी अवधारणा प्रतीत होती है क्योंकि उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बालक-बालिकाओं को शैक्षणिक एवं अन्य सुविधाएँ प्रचुर मात्रा में मिलती हैं जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक समूहों में इसका अभाव रहता है। यदि बालक-बालिकाओं को सुविधाएँ अधिक मिलती हैं तो ऐसी स्थिति में वे अपना सारा ध्यान अध्ययन एवं इससे मिलती जुलती शैक्षिक गतिविधियों में एकाग्रता के साथ लगा सकते हैं जो इनके सृजनात्मकता के विकास एवं उन्नयन में सहायक होता है।

गोपाल, टी. वेनू राय तथा डॉ. सत्यपाल (2011) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि यदि माता-पिता उच्च

व्यवसाय से संबंधित हैं तो उनके बालकों में सृजनात्मकता अधिक पाई जाती है। शोध परिणामों में पाया गया है कि सृजनात्मकता सामाजिक-आर्थिक स्थिति के कारण प्रभावित होती है। अमीर, फौरीगी एवं अन्य साथियों (2013) ने अपने शोध में उभरते किशोरों की सामाजिक-आर्थिक स्तर का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में परिवार की स्थिति, पिता की शिक्षा, माता की शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन किया। शोध परिणामों में पाया कि परिवार की आर्थिक स्थिति और सृजनात्मकता के बीच सकारात्मक सह-संबंध था। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों को वातावरण एवं सुविधाओं का उत्तेजन अधिक मिलता है जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के बच्चों इस उत्तेजन से वंचित रह जाते हैं।

निष्कर्ष :-

- (1) सामाजिक-आर्थिक स्तर का सृजनात्मकता के कारक धाराप्रभावशीलता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता - धाराप्रवाहशीलता अधिक है।
- (2) सामाजिक-आर्थिक स्तर का सृजनात्मकता के कारक लचीलापन पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता - लचीलापन अधिक है।
- (3) सामाजिक-आर्थिक स्तर का सृजनात्मकता के कारक मौलिकता पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के छात्र-छात्राओं की सृजनात्मकता - मौलिकता अधिक है।

संदर्भ ग्रंथ -

- अग्रवाल, जी. के. एवं अग्रवाल, मीनाक्षी (2003)-समाजशास्त्र, आगरा, चतुर्थ संस्करण, साहित्य भवन पब्लिकशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर, पृष्ठ संख्या 227
- कपिल, एच. के. (2012) अनुसंधान विधियाँ, आगरा, पन्द्रहवाँ संस्करण, एच.पी. बुक हाऊस, पृष्ठ संख्या-52
- पाठक, पी.डी. (2010) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, 50वाँ संशोधित संस्करण, विनोद पुस्तक मंदिर, पृष्ठ संख्या-509
- वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन. (2008) आधुनिक मनोविज्ञान, सोलहवाँ संस्करण (पृष्ठ संख्या-8)
- सिंह, अरूणकुमार, (1994) शिक्षा मनोविज्ञान, पटना, प्रथम संस्करण, भारतीय भवन, पृष्ठ संख्या-484
- T.Venu Gopal Ray & Dr. Satyapal (2011) 'Socio-Economic Status, scheduled caste and creativity' *Internation journal of Transformations in Business Management Vol. No.1 Issue ISSN : 22316868*
- Foroughi , A. (2012) 'Effect of Socioeconomic status on emersion adolescent creativity' *Asian social science vol. 9*
website : <https://www.researchgate.net/publication/264895588>

सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों पर व्यावसायिक दबाव का अध्ययन

मनीषा श्रीवास्तव*

शोध सार

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव में अंतर का अध्ययन करना था। शोध के लिए सागर जिले की सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 600 अध्यापकों का चयन किया गया जिसमें 300 पुरुष अध्यापक एवं 300 महिला अध्यापिकाएँ थीं। व्यावसायिक दबाव का अध्ययन करने के लिए डॉ. ए.के. श्रीवास्तव एवं डॉ. ए.पी. सिंह द्वारा निर्मित व्यावसायिक दबाव मापनी का प्रयोग किया गया है। तथ्यों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' परीक्षण द्वारा किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव में सार्थक अंतर है। सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव में विद्यालय की प्रकृति का सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया। निजी विद्यालयों के अध्यापकों का व्यावसायिक दबाव अधिक है।

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति को तर्कसंगत बनाती है और शिक्षा, तर्कसंगत रूप में, देश के भविष्य के पेशेवरों का सबसे महत्वपूर्ण वह समूह है जो उस देश के नागरिक कितने अधिक शिक्षित और विकसित है। इनसे ज्ञात होता है किसी भी शैक्षणिक कार्यक्रम की सफलता शिक्षक के कार्यों के प्रभावी तरीकों पर निर्भर करती है। शिक्षक हमारे शिक्षण तंत्र में सबसे महत्वपूर्ण गतिविधियों को नई दिशा व प्रेरणा प्रदान करता है।

शिक्षा आज के समाज की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन गयी है। शिक्षा प्राप्त करने पर व्यक्ति अर्थोपार्जन के योग्य बनता है तथा एक स्वावलंबी एवं गुणवान नागरिक बनकर राष्ट्रीय प्रगति को बढ़ाता है। विद्यालयों में बालकों को शिक्षा प्रदान करने का कार्य शिक्षक करता है। इस प्रकार समूची शैक्षणिक व्यवस्था में शिक्षक की आवश्यकता है जो न केवल अपने विषय का गहन ज्ञान रखता है एवं साथ ही प्रभावशाली समायोजित व्यक्तित्व भी रखता है। लेकिन वर्तमान में अन्य व्यवसायों की तरह शिक्षण कार्य भी एक व्यवसाय माना जाने लगा है। शिक्षक उस व्यवसाय में कर्मचारी मात्र बन गया है।

शिक्षक भी समाज का अंग है और उस पर अनेक सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक रीतियों का प्रभाव पड़ता है। शिक्षक का उद्देश्य शिक्षा प्रदान करना तो जरूर है पर व्यावसायिकता उसका एक अंग बन गयी है। समाज में भौतिकवादी धारणा के कारण शिक्षक वर्ग भी उससे अछूता नहीं रह पाया और शिक्षण व्यवसाय में रहते हुए उन पर लगातार व्यावसायिक दबाव बना रहता है।

“व्यावसायिक दबाव की संभावनाएँ वहाँ बनती है। जहाँ कार्य वातावरण की आकांक्षाएँ व्यक्ति के समक्ष ऐसी मांग प्रस्तुत करती हैं जो व्यक्ति की क्षमताओं एवं स्रोतों की तुलना में भारी पड़ती है।” (मैकग्राथ)

इस प्रकार व्यावसायिक दबाव शिक्षण की एक मानसिक या भौतिक मांग है। जो उनकी स्पर्धात्मक क्षमता की

*शोधार्थी, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

सीमा से बाहर चली जाती है। इस प्रकार व्यावसायिक दबाव उनके समायोजन एवं कार्य क्षमता को प्रभावित करता है। जो शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से बढ़ती हुई एक समस्या है। शिक्षण व्यवसाय में कार्य संबंधी जटिलताओं का बढ़ना एवं शिक्षकों पर बढ़ता प्रशासनिक व आर्थिक दबाव इसमें मुख्य कारण के रूप में प्रकट होते हैं। व्यावसायिक दबाव के फलस्वरूप अध्यापकों में अनिद्रा, व्यवहार में चिड़चिड़ापन, थकान तथा विभिन्न प्रकार के विकार जैसे- अवसाद, उत्साहहीनता आदि व्याधियाँ धीरे-धीरे उत्पन्न होने लगती हैं जिससे कार्य क्षमता प्रभावित होती है।

शोध अध्ययन का महत्व:- वर्तमान समय में भारत में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व में प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी मानसिक रोग से ग्रस्त है। ये रोग अनेक कारणों से होते हैं और व्यावसायिक दबाव उनमें से एक प्रमुख कारण है जिसका सम्पूर्ण विश्व के लोगों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। व्यावसायिक दबाव न केवल व्यक्ति की मानसिक क्रियाएँ प्रभावित करता है बल्कि इसका उसकी पाचन क्रिया, निद्रा, अन्तःस्त्रावी ग्रन्थियों में हार्मोन्स के स्त्राव की क्रिया व अन्य दैहिक क्रियाएँ भी गम्भीर रूप से प्रभावित होती हैं जिससे अत्याधिक दबाव व्यक्ति में भय, आक्रामकता, विरोध, आक्रोश, द्वेष, ईर्ष्या व घृणा जैसे विभिन्न प्रकार के नकारात्मक संवेग उत्पन्न व उत्तेजित होने लगते हैं। कार्य का दबाव व्यक्ति में बढ़ जाने का परिणाम केवल रोग ही उत्पन्न नहीं करता बल्कि कभी-कभी अत्याधिक दबाव के कारण व्यक्ति मृत्यु को गले लगा लेता है।

शोधकर्ता ने इस शोध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यावसायिक दबाव का अध्ययन किया है क्योंकि एक कुशल योग्य एवं संतुष्ट शिक्षक भावी देश का निर्माणाकर्ता होता है। यदि ये शिक्षक व्यावसायिक दबाव में रहेंगे तो वे अपने विद्यार्थियों को सही ढंग से ज्ञान प्रदान नहीं कर पायेंगे, जिसके फलस्वरूप एक उत्कृष्ट समाज राष्ट्र व विश्व का निर्माण नहीं हो पायेगा।

अध्ययन के उद्देश्य :-

- (1) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव का अध्ययन।
- (2) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव का अध्ययन।
- (3) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के व्यावसायिक दबाव का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ :-

- (1) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- (2) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
- (3) सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के व्यावसायिक दबाव में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

उपकरण :-

प्रस्तुत अध्ययन में व्यावसायिक दबाव को मापने के लिए डॉ. ए.के. श्रीवास्तव एवं डॉ. ए.पी. सिंह द्वारा निर्मित

व्यावसायिक दबाव मापनी का प्रयोग किया गया है।

शोध विधि :- प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :- प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत सागर जिले के सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 600 शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है जिसमें 150-150 पुरुष अध्यापक एवं 150-150 महिला अध्यापिकाएँ सम्मिलित हैं।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं विवेचना निम्नानुसार किया गया है:-

सारणी क्र.1

सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों (पुरुष व महिला) के व्यावसायिक दबाव का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
सरकारी विद्यालय	300	124.33	14.18	2.66	< 0.01
निजी विद्यालय	300	127.55	16.12		

स्वतंत्रता के अंश - 598

सार्थकता स्तर 0.01 का मान - 2.59

सारणी क्र.1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव का क्रांतिक अनुपात 2.66 पाया गया जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के मान 2.59 से अधिक है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालय के अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव में सार्थक अंतर है। निजी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव का स्तर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों से अधिक है।

सारणी क्र. 2

सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरुष अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
सरकारी विद्यालय	150	117.25	15.20	1.76	> 0.05
निजी विद्यालय	150	120.45	16.10		

स्वतंत्रता के अंश - 298

सार्थकता स्तर 0.05 का मान - 1.97

सारणी क्र.2 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव का क्रांतिक अनुपात 1.76 पाया गया जो 0.05 सार्थकता के मान से कम है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव में सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों का व्यावसायिक दबाव का स्तर समान है।

सारणी क्र.3

सरकारी एवं निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं के व्यावसायिक दबाव का तुलनात्मक अध्ययन

श्रेणी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात	'पी' मान
सरकारी विद्यालय	150	119.15	13.28	1.89	> 0.05
निजी विद्यालय	150	122.25	15.25		

स्वतंत्रता के अंश - 298

सार्थकता स्तर 0.05 का मान त्र 1997

सारणी क्र.3 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं के व्यावसायिक दबाव का क्रांतिक अनुपात 1.89 पाया गया जो 0.05 सार्थकता के मान से कम है। अतः निष्कर्ष निकलता है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं के व्यावसायिक दबाव में सार्थक अंतर नहीं है। अतः सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापिकाओं के व्यावसायिक दबाव का स्तर समान है।

निष्कर्ष :-

- (1) सरकारी एवं निजी विद्यालयों के अध्यापकों के व्यावसायिक दबाव में सार्थक अंतर है। निजी विद्यालयों के अध्यापकों का व्यावसायिक दबाव अधिक है।
- (2) सरकारी एवं निजी विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों पर व्यावसायिक दबाव में सार्थक अंतर नहीं है।
- (3) सरकारी एवं निजी विद्यालयों की महिला अध्यापकों पर व्यावसायिक दबाव में सार्थक अंतर नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ:-

- (1) अग्रवाल, जे.सी. (1995) "एसेन्शीयल ऑफ एजुकेशनल", साई कालोनी विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि.।
- (2) कपिल, एच.के. (2009) "सांख्यिकीय के मूलतत्त्व", आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
- (3) कुमार, रेडडी बी.एम. (2005) "The impact of gender and stress teachers Effectiveness" *Journal of Education and Psychology*, vol- 70-71
- (4) पाठक, पी.डी. (2015) शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
- (5) पाण्डे, एस. (2004) "Conflict management and stress among teachers" *New Frontiers in Education* vol-34, pp. 52-54.

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा केन्द्र एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन

श्रीमति सुजाता घोष *

शोध सार

प्रस्तुत शोध में जबलपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा केन्द्र एवं सह-शिक्षा केन्द्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन किया गया है शोध का प्रमुख उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा केन्द्र एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का अध्ययन करना था। शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श हेतु जबलपुर शहर के पाँच विद्यालयों के 200 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया, जिसमें 100 छात्र - 100 छात्राओं को, जो सह-शिक्षा एवं एकल शिक्षा केन्द्रों में अध्ययनरत थे, को यादृच्छिक विधि से चुना गया। संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण हेतु डॉ. (कुमारी) अनीता सोनी द्वारा निर्मित संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण का प्रयोग किया गया। उद्देश्य प्राप्ति हेतु सांख्यिकी विश्लेषण में मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रॉतिक अनुपात का प्रयोग किया। निष्कर्ष में यह पाया गया कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के सह-शिक्षा एवं एकल शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

संपूर्ण जीवमंडल में केवल मनुष्य ही है जो सभी कार्यों को बुद्धि से सोच समझकर आसानी से कर सकता है और उसके सोचने-समझने तथा आत्मविश्वास से कार्य करने में उचित शिक्षा बालक को मजबूत बनाती है। हम बालक से यह अपेक्षा करते हैं कि उचित शिक्षा ग्रहण करने के बाद वह एक कुशल नागरिक बनेगा और जीवन से संबंधित समस्याओं का समाधान वह स्वयं करेगा। शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् बालक के सामने अनेक चुनौतियाँ आती हैं। इनमें सबसे बड़ी चुनौती समायोजन की होती है यदि बालक समायोजित होने के बाद भी विपरीत परिस्थितियों में समायोजन न कर पाए तो इसका कारण होता है संवेगात्मक बुद्धि का उचित प्रयोग न कर पाना।

बालक के सर्वांगीण विकास में शिक्षण संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षण संस्थानों द्वारा बालक को विपरीत परिस्थितियों में सकारात्मक व नकारात्मक विचारों में समायोजन करना सिखाया जाता है। बालकों को किस प्रकार के शिक्षण केन्द्र में भेजा जाये यह एक समस्या है। यह समस्या बालक या बालिका की किशोरावस्था में बढ़ जाती है। कक्षा 1 से 5 तक बालक-बालिकाएँ एक साथ अध्ययन करते हैं परंतु उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में शिक्षण संस्थान का चयन बालक के विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षण संस्थान दो प्रकार के होते हैं- 1. सह-शिक्षा एवं 2. एकल शिक्षा। सह-शिक्षा केन्द्र में बालक-बालिकाएँ एक साथ अध्ययन करते हैं एवं एकल शिक्षा केन्द्र में या तो केवल बालक अध्ययन करते हैं या केवल बालिकाएँ अध्ययन करती हैं।

वर्तमान में सह-शिक्षा केन्द्रों का महत्वपूर्ण स्थान हो गया है। जब बालक-बालिका एक साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं तो उनमें आत्मविश्वास का विकास होता है तथा वे एक-दूसरे से समायोजन करना सीखते हैं। उनमें दूसरों के साथ संवेगात्मक समायोजन स्थापित करने के गुणों का विकास होता है। दोनों प्रकार के शिक्षण केन्द्रों में अध्ययन करने वाले छात्र-छात्राओं का

*सहायक प्राध्यापक, जबलपुर पब्लिक कॉलेज, करमेता, जबलपुर (म.प्र.)

व्यक्तिगत-सामाजिक विकास अलग-अलग प्रकार से होता है। सामान्य जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जब विद्यार्थियों को छोटी-छोटी बातों पर अपने संवेगों पर नियंत्रण खोते हुए देखा गया है जबकि इसके विपरीत कुछ विद्यार्थी विपरीत परिस्थितियों में भी शांत बने रहते हैं। विद्यार्थी के जीवन की गुणवत्ता उनके संवेगों के नियंत्रण से प्रभावित होती है। जीवन में सफलता केवल भौतिक संसाधनों से ही नहीं प्राप्त होती, वास्तविक सफलता के लिए सहयोग, त्याग एवं स्नेह जैसे जीवन मूल्यों की आवश्यकता होती है, परंतु सभी विद्यार्थियों के लिए इन पर अमल करना आसान नहीं है। गुस्सा एवं चिड़चिड़ापन विद्यार्थियों की भावनाओं में होने वाले उथल-पुथल उनके कार्य के निष्पादन की गुणवत्ता को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती है।

बार - ऑन (2006) ने संवेगात्मक बुद्धि को इस प्रकार परिभाषित किया है कि संवेगात्मक बुद्धि वह क्षमता है जिसके माध्यम से दिन-प्रतिदिन के पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटा जाता है जो व्यक्ति के जीवन में सफलता प्राप्त करने में मदद करती हैं। मिश्रा, के.एस. (2007) ने विद्यार्थियों में संवेगात्मक बुद्धि और सृजनात्मकता के बीच संबंधों का अध्ययन किया एवं निष्कर्ष में पाया गया कि संवेगात्मक बुद्धि शाब्दिक सृजनात्मकता के आयाम धाराप्रवाह, लचीलापन एवं मौलिकता तथा अशाब्दिक सृजनात्मकता के आयाम लचीलेपन, मौलिकता में सार्थक सह-संबंध नहीं होता है। के.सुब्रमणियम एवं राव, के. श्रीनिवास (2008) के अध्ययन में पाया गया कि लिंग का संवेगात्मक बुद्धि और अकादमिक बुद्धि पर प्रभाव नहीं पड़ता है तथा यह भी ज्ञात होता है कि अकादमिक बुद्धि और संवेगात्मक बुद्धि में संबंध नहीं होता है।

उद्देश्य :-

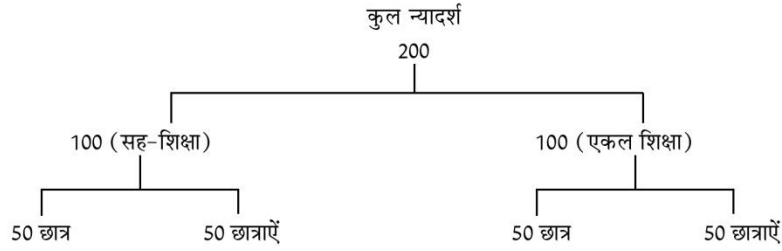
1. जबलपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर का अध्ययन।
2. जबलपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर का अध्ययन।
3. जबलपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में अंतर का अध्ययन।

परिकल्पनाएँ :-

1. जबलपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. जबलपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
3. जबलपुर शहर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।

न्यादर्श :-

जबलपुर शहर के 11 वीं कक्षा के एकल शिक्षा एवं सह-शिक्षा केन्द्र के 100-100 विद्यार्थी जिनमें 50 छात्र एवं 50 छात्राओं को न्यादर्श के रूप में यादृच्छिक विधि से चुना गया।



चर :-

- स्वतंत्र चर - सह-शिक्षा एवं एकल शिक्षा
 परतंत्र चर - संवेगात्मक बुद्धि
 नियंत्रित चर - कक्षा एवं आयु

उपकरण :-

संवेगात्मक बुद्धि परीक्षण - डॉ. कुमारी अनीता सोनी

परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या -

तालिका क्रमांक - 1

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल एवं सह-शिक्षा केन्द्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात संबंधी तालिका

शिक्षा केन्द्र का प्रकार	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात
एकल शिक्षा केन्द्र	100	112.93	14.36	2.16
सह-शिक्षा केन्द्र	100	117.17	13.50	

स्वतंत्रता के अंश - 198

सार्थकता स्तर 0.05 पर मान - 1.97

तालिका क्रमांक - 1 से स्पष्ट प्रतीत होता है कि एकल एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांको का मध्यमान क्रमशः 112.93 तथा 117.17 है साथ ही मानक विचलन क्रमशः 14.36 एवं 13.50 है क्रांतिक अनुपात का मान स्वतंत्रता के अंश 198 पर 2.16 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 के मान से अधिक है अतः एकल एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर होता है। एकल एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। अतः परिकल्पना 'जबलपुर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है' अमान्य होती है।

तालिका क्रमांक - 2

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सह-शिक्षा केन्द्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात संबंधी तालिका

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात
छात्र	50	118.90	15.96	0.38
छात्रा	50	117.80	12.71	

स्वतंत्रता के अंश - 98

सार्थकता स्तर 0.05 पर मान - 1.98

तालिका क्रमांक - 2 से स्पष्ट प्रतीत होता है कि सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 118.9 तथा 117.8 है साथ ही मानक विचलन क्रमशः 15.96 एवं 12.71 है। क्रांतिक अनुपात का मान स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 के मान से बहुत कम है। अतः सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में लिंग भिन्नताएँ नहीं होती हैं। अतः परिकल्पना "जबलपुर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के सह-शिक्षा केन्द्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है" अमान्य नहीं होती है।

तालिका क्रमांक - 3

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा केन्द्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि के प्राप्तांकों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात संबंधी तालिका

लिंग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात
छात्र	50	108.06	14.37	2.95
छात्रा	50	115.44	10.38	

स्वतंत्रता के अंश - 98

सार्थकता स्तर 0.05 पर मान - 1.98

तालिका क्रमांक - 3 से स्पष्ट प्रतीत होता है कि एकल शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 108.06 तथा 115.44 है। साथ ही मानक विचलन क्रमशः 14.37 एवं 10.38 है क्रांतिक अनुपात का मान स्वतंत्रता के अंश 98 पर सार्थकता स्तर 0.05 के मान से अधिक है। अतः एकल शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में लिंग भिन्नताएँ होती हैं। अतः परिकल्पना "जबलपुर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के एकल शिक्षा केन्द्रों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है" अमान्य होती है।

परिणामों की व्याख्या :-

एकल एवं सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि में सार्थक अंतर होता है के. सुब्रमणियम एवं राव, के. श्रीनिवास (2008) के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष का समर्थन नहीं करते हैं। प्राप्त निष्कर्ष का संभवतः कारण सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों का संवेगात्मक बुद्धि का विकास होना हो सकता है। सह-शिक्षा केन्द्र में पढ़ने वाले

छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में लिंग भिन्नताएँ नहीं होती हैं। तिवारी, एम.एम. (2017) के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत निष्कर्ष का समर्थन करता है। संभवतः इसका कारण सह-शिक्षा केंद्र में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि पर विद्यालयीन वातावरण का प्रभाव हो सकता है।

एकल शिक्षा केंद्र में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि में लिंग भिन्नताएँ होती हैं मिश्रा, के.एस. (2007) के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत निष्कर्ष का समर्थन करता है संभवतः इसका कारण एकल शिक्षा केंद्र में पढ़ने वाले छात्राओं में संवेगात्मक बुद्धि का अधिक होना है क्योंकि उन्हें परिवार तथा समाज में भी सामंजस्य स्थापित करना होता है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. Bar on R (2009) Emotional and social intelligence insight from the emotional quotient inventory psicothema 18 (Suplemento), pp.13-25.
2. K. Subramaniam & Rao, K.Shriniwas (2008) : Academic Achievement & emotional intelligence of secondary school children, general of community guidance and research, volume 25, no.2 pp. 224-228
3. Kulshreshtha, S.P. (2005) Educational Psychology, Surya Publication.
4. Mishra, K.S. (2007) Emotional Intelligence : Concept Measurement and Research Association for Educational Study, Allahabad, pp.128-131.
5. Shankhdhar B.M. Encyclopadia of Education System in India Vol. 12, Issue 1, pp. 19-23
6. तिवारी, एम.एम. (2007) 'उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के कला समूह के छात्र-छात्राओं की संवेगात्मक बुद्धि व तार्किक योग्यता का अध्ययन' International Journal of Advanced Educational Research. Volume2, Issue1 pp. 19-23

Higher Education System in India

Jaya Chaturvedi*

Abstract

The world has realized that the economic success of the states is directly determined by their education systems. Education is a Nation's Strength. Higher education system plays an important role for the country's overall development which includes industrial, social, economic etc. Indian higher education system is third largest in the world. The role of Indian higher educational institutes such as colleges and universities in the present time is to provide quality based education in the field of education, research etc to empower youth for self-sustainability. India provides highly skilled people to other countries therefore; it is very easy for India to transfer our country from a developing nation to a developed nation. This paper includes the key challenges that India is currently facing in higher education and also includes some initiatives taken by the government to meet those challenges.

Keywords - Higher Education

India's higher education system is the world's third largest in terms of students, next to China and the United States. In future, India will be one of the largest education hubs. India's Higher Education sector has witnessed a tremendous increase in the number of Universities/University level Institutions & Colleges since independence. Higher education means different things to different people. If we talk about higher education in terms of level, it means to gain higher educational qualification by the teaching-learning process in the higher educational institutes such as colleges and universities. Moreover higher education imparts knowledge, develops the student's ability and also gives him/her a wider perspective of the world around. Higher education becomes input to the growth and development of industry and also seen as an opportunity to participate in the development process of the individual through a flexible education mode. The 'Right to Education Act' which stipulates compulsory and free education to all children within the age groups of 6-14 years, has brought about a revolution in the education system of the country with statistics revealing a staggering enrolment in schools over the last four years. The involvement of private sector in higher education has seen drastic changes in the field. Today over 60% of higher education institutions in India are promoted by the private sector.

The quality of education in India whether at primary or higher education is significantly poor as compared to major developing nations of the world. As of 2008, India's post-secondary institutions offer only enough seats for 7 per cent of India's college-age population, 25 per cent of teaching positions nationwide are vacant, and 57 per cent of college professors lack either a master's or Ph.D degree (Newsweek, 2011). As of 2011, there are 1522 degree-granting engineering colleges in India with an annual student intake of 582,000 (Science and Technology Education, 2009) plus 1,244 Polytechnics with an annual intake of 265,000. However, these institutions face shortage of faculty and concerns have been raised over the quality of education (Mitra, 2008).

Despite these challenges higher education system of India equally have lot of opportunities to

*Asst. Professor, Jabalpur Public College, Karmeta, Jabalpur

overcome these challenges and have the capability to make its identity at international level? However, it needs greater transparency and accountability, the role of universities and colleges in the new millennium, and emerging scientific research on how people learn is of utmost important. India provides highly skilled people to other countries therefore; it is very easy for India to transfer our country from a developing nation to a developed nation.

Higher Education in India

As higher education systems grow and diversify, society is increasingly concerned about the quality of programs, public assessments and international rankings of higher education institutions. However these comparisons tend to overemphasize research, using research performance as a yardstick of institutional value. If these processes fail to address the quality of teaching, it is in part because measuring teaching quality is challenging (Hernard, 2008).

In the Indian system, higher (tertiary) education starts after the 10+2 (i.e. ten years of primary and secondary education followed by two years of senior secondary education). Framework of higher education in India is very complex. It includes various type of institutions like universities, colleges, institutes of national importance, polytechnics etc. Universities are also of different types like central universities which are formed by government of India, by an act of parliament which are responsible for arranging and distributing resources required by university grant commission (UGC), State universities, Deemed universities (aided and unaided) and Private universities. Under the department of higher education there are several regulatory bodies and research councils which are responsible for the higher education in India.

Regulatory Bodies :

- University Grant Commission (UGC)
- All India Council for Technical Education (AICTE)
- Council of Architecture (COA)
- Research Councils:
- Indian Council of Historical Research (ICHR)
- Indian Council of Social Sciences Research (ICSSR)
- Indian Council of Philosophical Research (ICPR)
- National Council of Rural Institute (NCRI)
- Project of History of Indian Science Philosophy and Culture (PHISPC)

Challenges of Higher Education System in India:

- **Gap between the Supply and demand:** In higher education, India has a low rate of enrolment i.e. gross enrolment ratio (GER), at only 19%. If we compared to china and brazil GER is 26% and 36% respectively.
- **Lack of Quality Research work:** There is no shortage of funding for the top Indian Institutions such as IITs, IIMs and other institutes of national importance. However, budget for the Research is not under spent due to the insufficient good quality research work. Due to the limited focus on Research and Internationalization, very few Indian higher educa-

tional institutes are globally recognized.

- Number of Research papers published in India has increased continuously for the past few decades but reflected in low citation impact if compared with other countries like Germany, United States, France and China.
- Indian higher education is facing with the problem of poor quality of curriculum. In most of the higher educational institutes curriculum is outdated and irrelevant.
- **Shortage of Faculty and High Student-Faculty Ratio:** In most of the state and central universities more than 30% of faculty positions are lying vacant. While the student enrollment in higher education is growing with faster rate in the last few years.
- **Inadequate Infrastructure and Facilities:** Apart from the highly recognized higher educational institutes in India most of the colleges and universities lack in the basic and high-end research facilities. Many institutes are running without proper infrastructure and basic facilities like library, hostels, transport, sports facility etc. which is desirable to rank the quality institution.
- Presently there is a very less collaboration of higher educational institutes with industries.
- Low employability of graduates is one of the major problems in India. Only a small proportion of Indian graduates are considered employable. Placement outcome also drop significantly as we move away from the top institutes.
- **Enrolment:** The Gross Enrolment Ratio (GER) of India in higher education is only 15% which is quite low as compared to the developed as well as, other developing countries. With the increase of enrolments at school level, the supply of higher education institutes is insufficient to meet the growing demand in the country.
- **Equity:** There is no equity in GER among different sects of the society. According to previous studies the GER in higher education in India among male and female varies to a greater extent. There are regional variations too some states have high GER while as some is quite behind the national GER which reflect a significant imbalances within the higher education system.
- **Quality:** Quality in higher education is a multi-dimensional, multilevel, and a dynamic concept. Ensuring quality in higher education is amongst the foremost challenges being faced in India today. However, Government is continuously focusing on the quality education. Still Large number of colleges and universities in India are unable to meet the minimum requirements laid down by the UGC and our universities are not in a position to mark its place among the top universities of the world.
- **Infrastructure:** Poor infrastructure is another challenge to the higher education system of India particularly the institutes run by the public sector suffer from poor physical facilities and infrastructure. There are large numbers of colleges which are functioning on second or third floor of the building on ground or first floor there exists readymade hosiery or photocopy shops.
- **Political interference:** Most of the educational Institutions are owned by the political leaders, who are playing key role in governing bodies of the Universities. They are using

the innocent students for their selfish means. Students organize campaigns, forget their own objectives and begin to develop their careers in politics.

- **Faculty:** Faculty shortages and the inability of the state educational system to attract and retain well qualified teachers have been posing challenges to quality education for many years. Large numbers of NET / PhD candidates are unemployed even there are lot of vacancies in higher education, these deserving candidates are then applying in other departments which is the biggest blow to the higher education system.
- **Accreditation:** As per the data provided by the NAAC, as of June 2010, "not even 25% of the total higher education institutions in the country were accredited. And among those accredited, only 30% of the universities and 45% of the colleges were found to be of quality to be ranked at 'A' level".
- **Research and Innovation:** There are very nominal scholars in our country whose writing is cited by famous western authors. There is inadequate focus on research in higher education institutes. There are insufficient resources and facilities, as well as, limited numbers of quality faculty to advise students. Most of the research scholars are without fellowships or not getting their fellowships on time which directly or indirectly affects their research. Moreover, Indian Higher education institutions are poorly connected to research centers. So, this is another area of challenge to the higher education in India.
- **Structure of higher education:** Management of the Indian education faces challenges of over centralization, bureaucratic structures and lack of accountability, transparency, and professionalism. As a result of increase in number of affiliated colleges and students, the burden of administrative functions of universities has significantly increased and the core focus on academics and research is diluted (Kumar,2015).

Initiatives taken by the government in the area of human resource development:

- A project has been taken up to make a national digital library of eBooks on various subjects and topics and another set up through which highly qualified faculty of centrally sponsored institutions like IITs, IIMs and central universities would offer online courses free of cost.
- Another special scheme called "Udaan" for girl students has been launched by the Central government. Under this scheme mentoring and scholarship will be provided to enable meritorious girl students to transit from schools to technical education without any difficulty and also to promote teaching and learning of mathematics and science at senior secondary school level by providing free resources.
- The focus of the project is to overcome the low enrolment ratio of girl students in prestigious technical institutions and enable them to receive special incentives and support so that they can join these institutions and go on to take leadership roles in the future.
- Another interesting step is the launching of a mission named after freedom fighter and educationist Pandit Madan Mohan Malviya to build a strong professional cadre of teachers by addressing all the issues related to teachers, teaching, teacher preparation, professional development, curriculum design, design and development of more effective pedagogy and better assessment and evaluation methodologies.

- The Central Government has also launched a scheme called Unnat Bharat Abhiyan for the promotion of technologies from the laboratory to the ground. Under the scheme, higher educational institutes would connect with villages in their neighborhood and address the various problems faced by them. The scheme would particularly look for the solutions for water management, organic farming, renewable energy, infrastructure and livelihood. IIT, Delhi is the coordinating institute of this scheme. About 130 villages have so far been adopted by IITs, NITs across the country under this scheme.
- Rashtriya Avishkar Abhiyan has launched to revive interest in the technology among youth through support for innovative learning based on observations and experimentation. The focus would be on learning outside the classroom through direct interaction with the environment around the educational institutions.
- Under the Global Initiative of Academic Networks (GIAN) programme, India's ministry of human resource development and department of science and technology will "create a channel for US professors in science, technology, engineering, and mathematics to teach in Indian academic and research institutions on short-term exchanges", as per the website of the US Department of State.

Suggestions Improving the System of Higher Education:

- There is a need to implement innovative and transformational approach from primary to higher education level to make Indian educational system globally more relevant and competitive.
- Higher educational institutes need to improve quality and reputation.
- There should be a good infrastructure of colleges and universities which may attract the students.
- Government must promote collaboration between Indian higher education institutes and top International institutes and also generate linkage between national research laboratories and research centers of top institutions for better quality and collaborative research.
- There is a need to focus on the graduate students by providing them such courses in which they can achieve excellence, gain deeper knowledge of subject so that they will get jobs after recruitment in the companies which would reduce unnecessary rush to the higher education.
- Universities and colleges in both public private must be away from the political affiliations,
- Favoritism, money making process should be out of education system etc.
- There should be a multidisciplinary approach in higher education so that students' knowledge may not be restricted only up to his own subjects.

Conclusion :

Education is a process by which a person's body, mind and character are formed and strengthened. It is bringing of head, heart and mind together and thus enabling a person to develop an all-round personality identifying the best in him or her. Higher education in India has expanded very

rapidly in the last six decades after independence yet it is not equally accessible to all. India is today one of the fastest developing countries of the world with the annual growth rate going above 9%. Still a large section of the population remains illiterate and a large number of children do not get even primary education.

In this paper the present situation of India in higher education sector is been presented. It also identify the challenges like demand-supply gap, lack of quality research, problem of infrastructure and basic facilities, shortage of faculty etc in the higher education. The implementation framework for twelfth plan aims to focus on improving quality of state institutions, to revamp financial aid programs, to interlink expansion, equity and excellence. To improve the higher education system there is a need to improve teaching pedagogy, build synergies between research and teaching, and facilitate alliance of higher institutions among themselves, research centers and industries. This is necessary not only to take care of economic growth, but it is also essential for social cohesion and to empower the country's youth.

References :

1. Agarwal, P. (2006). "Higher Education in India: The Need for Change." ICRIER Working Paper, Indian Council for Research on International Economic Relations: No. 180.
2. Balachander, K.K. "Higher education in India: Quest for Equality and Equity", Mainstream, 1986.
3. Barnett,R.(1992).Improving Higher Education: Total Quality Core, Buckingham: SRHE&OU.
4. Bhoite; Uttam. Higher Education in India: A system on the Verge of Chaos, Sociological Bulletin,2009, 58,147-177.
5. Higher Education in India: Twelfth Five Year Plan (2012-17) and beyond FICCI Higher Education Summit 2012.
6. Kumar, Anuj &Ambrish, Higher Education: Growth, Challenges And Opportunities, International Journal of Arts, Humanities and Management Studies, Volume 01, No.2, Feb 2015.
7. PWC report on "India-Higher education system: Opportunities for Private Participation, 2012.
8. SanatKaul, "Higher Education in India: seizing the opportunity", Working paper no. 179, 2006.

COGNITIVE INSTRUCTIONAL APPROACH WITH ICT IN LEARNING ENGLISH VOCABULARY

Dr. Kuldeep Kaur Juneja*

Abstract

A paradigm shift covering all the domains cognitive, affective and psychomotor domains is proposed in National Curriculum Framework (NCF) 2005. This shift causes active participation in learning, multiple and divergent exposure in integration with Information and Communication Technology (ICT).

It is enhancing student teacher competencies in handling classroom processes and practice, classroom discipline and ability for space and time management. Central Institute of Educational Technology of NCERT in collaboration with MHRD has developed A Digital Repository for open Educational Resources (NROER). It offers digital resources for all school subjects and grades in multiple languages. The resources on NROER are available in the form of videos, multimedia, learning objects, audio clips, talking books, photographs, diagrams, and charts, articles and wiki pages. It offers an interactive learning paradigm. Successful learning is dependent not only on what the teacher or pedagogical medium presents, but also on what the student does to process this input, storing and retrieving information organized in memory. An example of an extensively developed empirically grounded, cognitivist theory is Richard Mayer's work on Multimedia Learning. In interactive learning a focus on collaborative learning environment is essential for harnessing the needs of the students in a different way with freedom and flexibility to explore, in making one's own learning decisions. As such learning competencies have to be built up step by step. Teachers as knowledge workers need to be updated with the latest technological innovations. The focus in education shifts towards life long learning and knowledge creation, demanding changes in educational goals, as well as curriculum and pedagogical processes (Pelgrum and Law, 2003).

Keywords - Cognitive Instructional Approach, ICT, Multimedia, English Vocabulary.

The most striking innovation in the field of education is the integration of information and communication technology in education. The educational institutions cope with the suddenly increasing demand for information and skills. Globally education has seen rapid changes in the recent times. These revolutionary changes, because of digital revolution, are taking place across the globe. Digital revolution has helped the teachers to bring a change in the way students learn different concepts and theories in schools and colleges. The traditional chalk and talk method in schools and colleges has been slowly changing with more interactive teaching methods as schools and colleges are increasingly adopting digital systems and solutions.

Digital learning is a gift for the current generation of students who are well - versed with laptops, I- pads and smart phones. Different private companies like - educomp, Tata Class Edge, Pearson and Teach Next are continuously developing different interactive software to help teachers in class-

*Asst. Prof., Nirmala College of Education, Ujjain

room teaching. These technological innovations provide teachers and students with director and authorware tools supporting an Interactive Learning environment in the teaching-learning process. It encourages teamwork, collaborative work, co-operation and critical thinking skills among the students. Gagne (1970) considers a teacher as a designer and manager of instruction and an evaluator of student learning in the eight phases of learning. For each phase of learning one or more internal processes occur in the learner's central nervous system. The internal processes may be influenced by external events in the form of environmental stimulation. Hence, we may say that instruction consists of the teacher's planning and controlling those external events. Instructing, is therefore arranging the proper conditions of learning that are external to the learner. **The stimulation of recall of previously learned capabilities, the direct presentation of appropriate stimuli, the activation of desired mental sets and the provision of feedback** are the four most general components of instruction that are available to a teacher for influencing the learning process in his students.

Information and Communication Technology:

The role of information technology in helping students learn a curriculum composed of knowledge and skills, delivered via pedagogy and evaluated through assessment is to see the tools, applications, media and virtual environments used as instrumental. Information and Communication technologies (ICT) aid with representing content, engaging learners, modeling skills and assessing students progress in a manner parallel to how a carpenter would use a saw, hammer, screwdriver and wrench, etc to help construct an artifact. The two key points in this analogy are

- (i) The tools make the job easier and
- (ii) The result is of higher quality than is possible without the tools.

Another example in this context, is of the Interactive White Board (IWB) used by a teacher while teaching in the classroom. For example, Power Point is an application developed to aid with the process of lecturing, a form of presentational/assimilative pedagogy. This tool is not intended to facilitate assessment and is deliberately designed to communicate a broad spectrum of content-although in fact Power Point is better at conveying some types of material (e.g., bullet points of information) than others (e.g., dynamic representations of changes in a system over time). A teacher can use Power Point presentation to increase the knowledge of the students, as **Virtual Learning Environment (VLE)** helps in effective teaching-learning process. Successful learning is dependent not only on what the teacher or pedagogical medium presents, but also on what the student does to process this input, storing and retrieving information organized in memory, as proven by various psychological theories that underlie different models within the general framework of cognitivist instruction that were developed by diverse groups during the second half of the twentieth century.

Cognitive Instructional Technologies:

Cognitive theories of learning assume that reality is objective, but mediated through symbolic mental constructs. Students learn through mastering building blocks of knowledge based on pre-existing relationships among content and skills. Instructors organize and sequence these building blocks to facilitate optimal mental processing. Knowledge acquisition is a mental activity that also entails internal structuring by the student. Students learn the content and decode the knowledge given by the teacher. This encoding and decoding of content helps in proper utilization of the pedagogical content, various psychological theories were developed. Researchers whose theories were formative in developing this school of thought include Anderson (1993), Bruner (1960), Mayer (1977), Norman

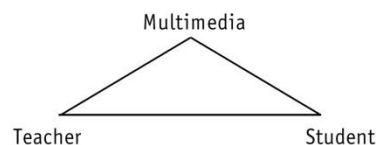
(1980), Newell and Simon (1972) and Palincsar and Brown (1984). Instructional design strategies based on cognitivist theories are designed to help students understand disciplinary knowledge. (Case, 1992; Lee and Ashlay, 2001; Hunt and Minstrell, 1994). An example of an extensively developed, empirically grounded cognitivist theory is Richard Mayer's work on **Multimedia Learning**.

Richard Mayer and Moreno (1998) showed that in Multimedia Learning, the learner engages in three important cognitive processes.

- The first cognitive process, **Selecting** : It is applied to incoming verbal information to yield a text base and is applied to incoming visual information to yield an image base.
- The second cognitive process, **Organizing** : It is applied to word base to create a verbally based model of the to - be - explained system and is applied to the image base to create a visually based model of the to - be - explained system.
- Finally, the third cognitive process, **Integrating** : It occurs when the learner builds connections between corresponding events (or states or parts) in the verbally based model.

Mayer's - Cognitive school of thought :(National Research Council, 2005) Mayer theory illustrates goals for instruction characteristic of the cognitive school of thought, which include:-

- Providing a deep foundation of factual knowledge and procedural skills.
- Linking facts, skills, and ideas via conceptual frameworks - organizing domain knowledge that facilitates retrieval and application.
- Helping students develop skills that involve improving their own thinking processes, such as - setting their own learning goals and monitoring progress in reaching these. Student motivation to achieve these goals is determined by a variety of intrinsic and extrinsic factors, such as - setting their own learning goals and monitoring progress in reaching these. Learning can take place at the learner's own pace and time. The mode of learning is student-centric or self-directed learning, which will cater to individualistic needs in learning unlike the mass learning method as practiced in the teacher-centric or directed instructional model. The model below shows an Interactive Learning Process:-



In the student-centered learning mode, the students must play an active part in their learning and construct their own knowledge or meaning of what they learn. The learners determine how to reach the desired learning outcomes. The student-centered learning environment includes having students develop critical thinking skills, experimental learning and construct their own knowledge of the problem (Oliver, 2000). Cook and Cook (1998) posit that student-centered learning involves problem-solving, team skills, and inter-disciplinary knowledge with technology being integral to their learning. It also represents a move away from the traditional modes of education to one where the learners are

active participants in the learning process (Oliver, 1998).

About the Study :

The purpose of the study was to develop a multimedia presentation for teaching English Grammar for the students studying in rural areas. The present study was an experimental study with variables like- multimedia presentation and learning English Grammar. The study involved pre-test and post-test design with treatment in between. Research evidence indicated that the multimedia presentation being an innovative approach to teaching learning process, endless drill and practice without repetition and provide feedback to the learner on his/her progress. Thus, the study assumes its significance and relevance in the present context. Hence, the researcher intended to make use of multimedia CD - ROM combining text, pictures, audio and video films for the purpose of Teaching English Grammar. The cognitive approach emphasizes how the learner interacts with the English language. An effort was made to make language acquisition a more active process. Instruction was based on activating prior knowledge and allowing the learner to build the cognitive skills required to understand, process, and interact with language. Effective opportunities to learn a second language with the cognitive approach can be divided into three stages: (a) Comprehensible input, (b) Interaction, and (c) Comprehensible output (Plass and Jones, 2005). Researchers have also investigated the benefits of students actively using second language vocabulary versus passively receiving information. The students in the former group were more engaged in the learning process and retained more information. (Nikolova, 2002). Thus, there was a need for use of language in meaningful contexts to develop the learner's communicative competency.

Objectives of the study :

- To study the impact of multimedia package in improving English vocabulary skills of rural adolescents.

Hypothesis of the study:

- There is no significant effect of multimedia package in improving English vocabulary skills of rural adolescents in comparison with traditional method.

Methodology :

Parallel group experimental method was adopted in the study. The true experimental design employs randomization to provide for control of the equivalence of groups and exposure to treatments. The pretest-posttest equivalent groups design was used.

Population and Sample :

The study was confined to 210 students of class IX and X from rural Senior Secondary schools of Ujjain. 105 students were considered as controlled group and another 105 students considered as a tool for study. The control group students were not allowed to get any exposure on the subject matter than the traditional classroom teaching but the experimental group students were given treatment with multimedia package on teaching English grammar.

Tools :

The investigator used the following tools for data collection :

- (i) Achievement test in English grammar constructed and validated by the investigators.

This includes:

- Text based questions
- Fill in the blanks
- Choose the correct option

(ii) Multimedia package on English grammar prepared by the investigators.

Statistical Technique Employed:

The data was collected and analyzed keeping the objectives in view and the design of the study. Descriptive statistics such as mean and standard deviation were worked out to describe the nature of data. In order to find the perceived influence of Multimedia Package on English vocabulary skills on rural adolescents, t-test was employed. The controlled group was taught by the traditional method for a week. But the experimental group was taught using Multimedia Package for learning English vocabulary for a week. Thus, the effectiveness of multimedia package was determined.

Data Analysis :

The table below shows the pre test results of control group and experimental group of rural adolescent in English vocabulary skills.

Table No. 1

Comparison of the difference between the means of pre-test scores of experimental and control groups of rural adolescent in English vocabulary skills

Groups	N	df	Mean	SD	Critical Ratio
Control	105	208	8.88	2.29	0.17
Experimental	105		8.94	3.86	

The table below shows the post test results of control group and experimental groups of rural adolescent in English vocabulary skills.

Table No. 2

Comparison of the difference between the means of post test scores of experimental and control group of rural adolescents in English vocabulary skills.

Groups	N	df	Mean	SD	Critical Ratio
Control	105	208	8.42	4.33	16.45
Experimental	105		15.85	2.76	

In pretest, the obtained value of critical ratio for the experimental and control group was 0.17. The obtained value is less than the table values and is not significant at .05 level, (C.R. = 0.17, df = 208). From this it is clear that the students of the two groups do not differ significantly in vocabulary skills before experiment.(Table no-1)

In post test, the obtained value of critical ratio for the experimental and control groups is 16.45. The obtained value is greater than the table values and is significant at .01 level, (C.R. = 16.45,

df = 208). From this it is clear that the students of the two groups differ significantly in vocabulary skills after the experiment. The experimental group was better than the control group.

Findings of the study :

The findings of the study were in line with the results of (Plass & Jones, 2005, p. 470), Learning a second language with multimedia materials.

In the first stage of the cognitive approach for acquisition of English vocabulary, comprehensible input implies increasing the accessibility of materials by using a multimedia glossary for problematic vocabulary. When students have access to images, sentences and pronunciations and vocabulary terms their comprehension of the content increases.

The second stage of cognitive approach interaction includes "Information links that provide simplification, elaboration, classification, definitional, support or redundancy" (Plass & Jones, 2005, p. 469). Student's interaction with content can also be effective when they have control over the mode of presentation. Students prefer text + image + sound or text + image. This can be decided by the student or teacher's best judgment is required when deciding what supports are appropriate for the learner.

The third stage of cognitive approach, comprehensible output, as "the need for use of language in meaningful context to develop the learner's communicative competency" (p. 475). Effective means to support students for self-correction. So far as the vocabulary is concerned, it is the foundation of language. A building cannot be built until its foundation stone is strong. It is said that "without grammar very little can be conveyed without vocabulary nothing can be conveyed". Thus, communicating in a foreign language is not very difficult provided one knows the appropriate vocabulary. For improving knowledge of English, improvement in vocabulary is strong. Knowledge of English will increase automatically on giving impetus to English language in India, vocabulary must be improved.

Conclusions :

1. Law and Plomp (2003) categorized the role of ICT in the curriculum into learning about ICT (as a subject), learning with ICT (as a medium to support and enhance existing instructional practice) and learning through ICT (which involves a full integration of ICT to bring about learning experiences that would otherwise not be possible). With the exception of the first kind of ICT adoption, which comprises only a very small part of the curriculum focus in most countries, the acquisition of technical knowledge and skills is only one component in the teacher professional development needed.
2. Teachers should learn for pedagogical innovation which is becoming increasingly important in the 21st century. The focus in education shifts towards life long learning and knowledge creation, demanding changes in educational goals, as well as curriculum and pedagogical processes (Pelgrum and Law, 2003).
3. Students remain updated about the pedagogical content with the help of Augmented Reality (AR) interfaces which enable "ubiquitous computing" models. Students carrying mobile, wireless devices through real world contexts engage with virtual information.
4. At the very last, the findings of the study point out the need for digital multimedia environments to make vocabulary strong and to help develop a command over English language. We

have to concentrate our efforts on listening, speaking, writing and reading aspects of language especially at the school stages.

5. Hence, it is expected from a high school student that he should be able to speak, write, read accurate and correct English. This can be possible only because of grammar and of course of vocabulary. Good vocabulary makes both oral and written expression impressive, precise and accurate and goes a long way in improving the achievements. Good vocabulary also develops sense of confidence in children.

References :

1. Chris, Dede (2008). Theoretical Perspectives Influencing the Use of Information Technology in Teaching and Learning. International Handbook of Information Technology in Primary and Secondary Education, 43-59.
2. Margaret, J.Cox (2008). Researching IT in Education.
<http://www.researchgate.net/publication/226572626>
3. Mathur, S.S. (2010). Educational Psychology. Agrawal Publications, Agra - 2, ISSN - 978 - 93 - 80063 - 98 - 0.
4. Nancy, Law (2008). Teaching Learning beyond Knowledge for Pedagogical Innovation with ICT. Centre for Information Technology in Education, Faculty of Education, University of Hong Kong. International Handbook of Information Technology in Primary and Secondary Education, 425-434.
5. Plass and Jones (2005). Learning a Second Language with Multimedia Materials. Centre for Implementing Technology in Education (CITeD) www.CITeD.institute.org
6. Tomar, Chitra Singh (2015). Testing English Vocabulary. Bhartiya Shiksha Shodh Patrika, Volume - 34, No. 2, July-Dec- pp-9 - 12

E-Governance, its role in the process of modernization in education system

Sharafat Ali Khan*

Abstract

India has one of the largest education system in the world. Despite having largest education system, the quality of education in general can't be claimed to be the best. Since a country's social and economic process hinders largely on its people having access to the vast area of knowledge gained through modern channels of learning, it is important to ensure that educational sector keeps up with the times. It is beyond doubt that for the quantity and quality of output of our education system to substantially improve, there is no option but to introduce e-governance in this sphere.

As a concept, it is important that governance should include all stakeholders such as school authorities, teachers, parents, children, and even governmental bodies such as CBSE. Instead of merely being consultants, they should be part of the active decision-making process. Such a comprehensive and integrated system can also enable authorities to analyze the performance of one of the best performing institutes and compare it with other schools and colleges to identify the gaps.

Modernization is inevitable process of change. From the beginning of use till now life has been changing. "There is nothing more permanent than change." Change is the law of nature and changes in the society are always taking place. So change in one way or the other way, slow or rapid is accepted by society. Thus change in the process of modernization goes through the same way; sometimes slow, sometimes rapid is accepted by the society.

Modernization is generally regarded as process of change -change of traditional society into a society based on science and technology. It can be defined as a process of transforming the old traditional society and nations to the modern in the field of social, economic, industrial, technological, political, cultural, and educational attachment. As a historical category, Modernization refers to a period, marked by questioning or rejection of tradition, the prioritization of individualism, freedom, formal equality, faith in inevitable social, scientific and technological process and human perfectibility.

Broadly speaking the process of Modernization reveals the following important characteristics. Modernization includes. "A temple of science , reason and rationalism , secularism , high aspiration and achievement orientation, overall transformation of attitudes, norms and values, creation of new functional institutions, investment in human resources a growth oriented economy , a national interest rather than kin, caste, religion, region or language oriented interests an open society and a mobile person." It is a comprehensive concept aimed at capturing, describing, and evaluating profound qualitative and quantitative changes in the society. It stands for progress beyond traditions.

E-governance in education system :

India has one of the largest education system in the world. Despite having largest education

*Ph.D. Scholar, Dept. of Education, RDVV, Jabalpur (M.P.)

system, the quality of education in general can't be claimed to be the best. Technical and vocational education in India has been enormous growth in recent years with a large increase in total number of institutes importing higher education on the one hand, this promises to produce more skilled youth to fulfill needs of ever growing Indian industry and on the other hand it possess a huge challenge for the governing bodies to maintain and improve the quality of education being imparted through these institutions. The lack of knowledge, qualities and skills desired by the employers, from the youth may lead to the problems like unemployment which will lead to their disapproval and hence their offence that will be reflected in terms of an increase in crime and other anti-social activities.

Since a country's social and economic process hinges largely on its people having access to the vast area of knowledge gained through modern channels of learning, it is important to ensure that educational sector keeps up with the times, in other words, it is evolving. However, the country's education sector, particularly higher education, is often accused of being overly regulated and under governed. With science and technology at such a rapid rate, the conventional classroom education we offer can hardly be described as sufficient.

Although the concept of effective school governance is not new, it needs to be thoroughly innovated to be able to effectively deal with the new challenges confronting us. In this context, e-governance can facilitate in improving transparency, providing speedy information, dissemination, improving administrative efficiency and public services in all the aspects of education. It is beyond doubt that for the quantity and quality of output of our education system to substantially improve, there is no option but to introduce e-governance in this sphere. Although the application of ICT is fairly wide spread in the private sector, the education sector, one of the key pillars of the country, has remained relatively untouched by e-governance.

Before delving into E-Governance, the first step should be to define governance and lay down its scope and objectives. The age old concept of Governance has been reintroduced into modern discourse, focusing on how to achieve good governance. Good governance is the ability to differentiate between right and wrong, just and unjust, fair and foul, and moral and immoral. In the Arthshastra, Kautilya says that the person who governs should realize that his achievement or success is measure of the happiness of his subjects and that what is good for the subjects should be undertaken. Governance standards should be improved not only at the government level but in all areas of society.

As a concept, it is important that governance should include all stakeholders such as school authorities, teachers, parents, children, and even governmental bodies such as CBSE. Instead of merely being consultants, they should be part of the active decision-making process. But this simply is not enough. It is important to ensure that governance is not only participatory but also accountable and transparent. For the smooth functioning of the system, it is imperative that responsibilities and accountabilities be clearly laid down for all stakeholders. In addition, there should be an effective grievance redressal mechanism in place. It also goes without saying that this structure would work only if it were allowed to be flexible, implying that school boards should not impose rigid regulations on school and teachers.

In this respect, technology can act as a great enabler by making it easier for all parties concerned to be able to have access to meaningful information. Implementing e-governance will help us

to monitor academic standards. It can help in continuous monitoring, assessment and meaningful evaluation of the teacher and the pupil. Constant feedback to the persons concerned be it administrators, faculty, parents and students and appropriate timely control and correction mechanism can be easily undertaken. It may also be possible to analyze the reasons of dropping out of the system while at the same time it can make teachers more accountable.

Add on features such as online testing tools can help appraise the performance level of students and that of teachers. It can send SMS or e-mails messages to parents if their children are absent at school, enhancing parent's involvement in their children's schooling activities.

Such a comprehensive and integrated system can also enable authorities to analyze the performance of one of the best performing institution and compare it with other schools and colleges to identify the gaps. Also the system can obtain feedback from students to modify course curriculum if deemed appropriate by the authorities. This will allow all the low performing schools and colleges to reduce the gap with better performing institutes. It will help in the betterment of the higher education in the country and increase the number of employable students.

The mobile phone and the internet have succeeded in transforming our lives in ways that could hardly be envisioned a decade ago. Not only has the internet revolutionized information dissemination, it has also exposed us to new ways of thinking and ideas. Coupled with change social structures, conditioned mindsets of a new generation of parents, and makes it important for all stake holders to have a more interactive relationship.

It is thus important to take into account different views and opinions of all be it teachers, parents or children. Additionally given the new avenues that have opened up and given the highly - competitive environment, ensuring that students are exposed to a variety of careers will only help expand their horizon. It is important to establish links with community by which i mean business and industry, to ensure a healthy participation of the general community and provide a plate form to share ideas.

Change has been happening at an uneven pace in any growth - oriented industry and the education sector is no exception. Rapid growth in the field of education has made governance in academic sector a very complex task. The 21st century has witnessed tremendous advancement in technology which has led to far-reaching developments in the administrative system. Cost effective technology combined with the flexibility in learning and administrative activities is essential to enhance efficiency. Computers can be used extensively for educational administration. There are some of the areas where computers can be used for effective educational administration (Ben-Zion Barta et al.1995) i.e. General Administration, administration of student data, personal records maintenance and library system.

ICT plays a vital role in supporting powerful, efficient management and administration in education sector. It is specified that technology can be used right from student administration to various resource administration in an institution (Christiana Maki 2008). Sharad Sinha(2008) mentioned the various administrative challenges for Indian education system of the 21st century which are as Global and Local Challenges , universal and individual challenges, competition and equity challenges, and extra ordinary expansion of knowledge.

Necessity of e-governance in education system :

If the quality of our higher education has to be improved to make these institutes really world class, then there is no alternative to the introduction of e-governance in this sphere at the fastest possible pace. Implementation of e-governance in technical and vocational institutes will enable their effective and real time monitoring by government / the regulatory bodies and other stakeholders their own managements, parents of the students and the society, thereby forcing them to maintain quality and become more responsible. E-governance process brings transparency in the system, so e-governance initiatives in the field of higher education will help to reduce the corruption up to a large extent. The introduction of e-governance in higher education is one such concept that can empower the governing bodies to administer the progress of the educational plan in the whole country and serves various stakeholders in a much better way. It is becoming a global phenomenon that is increasingly attracting the attention of community citizens including politicians, economists, decision and policy makers amongst other. The benefits of e-governance in an educational sector are improved efficiency, increase in transparency, and accountability of educational administrative activities convenient and faster access to services, lower costs for administrative services.

Nowadays our education system is untidy; to say the least it is characterized by substandard technical and vocational institutions lagging good infrastructure and qualified teachers, absolute syllabi, inadequate infrastructure, unemployable youth and a lot more problems. The scenario has been further worsened due to the lack of some effective and real time monitoring mechanism and widespread corruption prevalent in government regulatory bodies that help such substandard institute to start and remain functional without bothering to maintain any quality at all. Mushrooming of a large number of unrecognized institutions without being caught is also another outcome of such an untidy system.

Conclusion :

To maintain the standard of education system in India, in order to achieve the best standard it is necessary to have an improved collaboration and access to information available in all the parts of the world are possible only by introducing IT in educational sector with e-governance as a security for maintaining standard. The e-governance needs security for smooth information flow, best practice data base, and enhanced capacity for information analysis etc. Government should support by enacting favorable legislations and updated amendments for maintaining standards in educational process, and improvements in the related field it requires completely new infrastructure, procedures, policies and working skills for producing and collecting online information. Through e-governance we can improve the quality of education system in India. It can create the transparency between the universities both in terms of needs and responsibilities.

I would like to conclude by saying that for us to ensure that the education system can fully equip our children to meet the ever evolving demands in today's highly-competitive environment, the education system needs to be made more efficient and effective by implementing e-governance. It is high time our educators think in terms of imparting what is known as life-long education or more aptly, life-long self-education.

References :

- Ashok kumar, (2012). E-governance in education sector. Giyan jyoti e-journal, vol-1, issue-2.
- D. Kartika, R.Rangaraj, (2013). Survey of e-governance based higher education system in India with data mining. International journal of science and research, vol-2, issue-12.
- Dr. R.K. Shrivastav, Neeta Saxena, (2014). Role of e-governance to strengthen higher education system in India, vol-4, issue-2, PP 57-62.
- Gronlund, A. & Horan, T., (2005). Introducing e-governance: history, definitions & issues, communications of the AIS, vol-15, issue-39, PP 713-729.
- Harshita Bhatnagar, (2013). E-governance in higher education sector. A case study of IGNOU, New Delhi. International journal of scientific & engineering research. Vol-4, issue-5.
- Imtiyaz Ahangar, Jabalpur, (2017). Modernity, SES & academic achievement of secondary school students of district Jabalpur. Shrinkala e-journal, vol-4, issue-7, PP 65-68.
- Manpreet Kaur, & Vishal Sood, (2016). E-governance an effective tool of modernization. Imperial journal of interdisciplinary research, vol-2, issue-8.
- Prateek Bhanti, Dr. S. Lehri, (2012). E-governance: an approach towards the integration of higher education system in India. International journal of emerging technology & advanced engineering, vol-2, issue-8.
- Sudip Sukhlabaidya,(2013). Challenges & prospects of e-governance in education. International journal of emerging technology & advanced engineering, vol-2, issue-8.

ROLE OF ICT'S IN EDUCATION SYSTEM, ITS RIGHTS AND RESPONSIBILITIES

Imtiyaz Ahmad Ahangar*

Abstract

One of the many challenges facing developing countries today is that of preparing their societies and governments for globalization and the information and communication revolution. Information technologies are the bench mark of the 20th century and the main features of the beginning 21th century. ICT includes computers, the internet, and electronic delivery systems such as Radio's, T.V's and Projectors among others and is widely used in today's education field. ICT tends to expand access to education. Through ICT, learning can occur anytime and anywhere. In recent years there has been a groundswell of interest in how computer and the internet can best be harnessed to improve the efficiency and effectiveness of the education system.

In India, the implementation and the use of ICT in education often lags behind other social and economic spheres including communications, employment and commerce. Nevertheless, as the integration of ICT in education rises and participation and transition rates to higher levels of education increase, children and adults will increasingly need to acquire different forms of digital literacy beyond basic computer skills to participate in several of life's spheres.

One of the many challenges facing developing countries today is that of preparing their societies and governments for globalization and the information and communication revolution. Policy makers, educationists, NGO's, academics and ordinary citizens are increasingly concerned with the need to make their societies competitive in the emergent information economy. Globalization and innovations in technology have led to an increased use of ICT's in all sectors- and education is no exception. Uses of ICT's in education are widespread and are continually growing worldwide. It is generally believed that ICT's can empower teachers and learners, making significant contributions to learning and achievements.

Information technologies are the bench mark of the 20th century and the main features of the beginning 21th century. The dissemination of tools (computer, internet, mobile communication) has enabled society to achieve the necessary instruments to make knowledge accessible instrument, to make knowledge accessible to the masses, and to augment productivity in industry, in agriculture, in services and expanded cultural activity.

To understand the importance of ICT in education it is important to understand the meaning of ICT. ICT stand for Information and Communication Technology and are defined for the purpose of this primer as a "diverse set of technological tools and resources used to communicate and to create, disseminate storage and manage information. ICT permeates the business environment, it underpins the success of modern cooperation's, and it provides government with an efficient infrastructure. At

*Ph.D. Scholar, Dept. of Education, RDVV, Jabalpur (M.P.)

the same time, ICT adds values to the processes of learning and in the organization and management of learning institutions.

ICT includes computers, the internet, and electronic delivery systems such as Radio's, T.V's and Projectors among others and is widely used in today's education field. Kent and Facer (2004) indicated that school is an important environment in which students participate in a wide range of computer activities, while the home serves as a complimentary site for regular engagement in a narrower set of computer activities. Increasingly, ICT is being applied successfully in instruction, learning, and assessment. ICT is considered a powerful tool for educational change and reform. A number of previous studies have shown that an appropriate use of ICT can raise quality and connect learning to real-life situations (Lowther, et al 2008, Wreet and Tatnal 2005). As Wreet and Tatnall (2005) have pointed out, Learning is an ongoing lifelong activity where learners change their expectations by seeking knowledge which departs from traditional approaches. As time goes by they will have to expect and be willing to seek out new sources of knowledge, skills in using ICT will be an indispensable prerequisite for these learners.

ICT tends to expand access to education. Through ICT, learning can occur anytime and anywhere. Online course materials can be accessible 24x7. Teleconferencing classrooms allow both learner and teacher to interact simultaneously with ease and convenience. Based on ICT, learning and teaching no longer depend exclusively on print material. Multiple resources are abundant on the internet and knowledge can be acquired through video-clips, audio-sounds, and visual presentation and so on. Since learners are actively involved in the learning process in ICT classrooms, they are authorized by the teacher to make decisions, plans and so forth (Lu Hou and Huang 2010). ICT therefore provides both learners and instructors more educational affordances and possibilities.

In recent years there has been a groundswell of interest in how computer and the internet can best be harnessed to improve the efficiency and effectiveness than just technologies, older technologies such as the telephone, Radio and Television, although now given less attention have a longer and richer history as instructional tools. For instance radio and T.V have for over forty years been used for open and distance learning, although print remains the cheapest, most accessible and therefore most dominant delivery mechanism in both developed and developing countries. The use of the computer and internet is still in its infancy in developing countries, if these are used at all, due to limited infrastructure and the attendant high cost of access. ICT has become in a very short time one of the basic building block of modern society. Many countries now regard understanding ICT and mastering the basic skills and concepts of ICT as part of the core of education alongside - reading, writing, and numeracy

One of the UNESCO's overriding aim is to ensure that all countries, both developed and developing have access to the best educational facilities necessary to prepare young peoples to play full roles in modern society and to contribute to a knowledge nation, maintaining a capacity to advise national government on the use of technology in schools and in particular on the optimal balance given local circumstances between ICT and older educational technologies and assisting countries in developing educational software and materials that reflect their own national and regional cultures are key components of the organization's strategy to achieve the education for all goals. One of the greatest challenges put on the agenda by technological innovation is the narrowing of the digital gap. If technology has provided huge advances, it has also accentuated the distance between those who are (or can be) and those who are not yet prepared to use it. The network society or information society

has been lauded by optimists as enhancing the chances for growth and development through ICT. They are considered capable of improving social indicators of offering new development opportunities of strengthening democracies and of improving the life of the poor in under developed countries and regions of the world.

For almost four decades education policy makers have been formalizing all-inclusive ICT policies as part of educational renewal and reform. At the international level, policy for integrating ICT for development was first formulated in the millennium development goals (MDG's) target ,which states that "in cooperation with the private sector, make available the benefits of new technologies , especially information and communication" (United Nations, 2000; United Nations, 2012). Considerable strides have been made to harness the power of ICT to help meet many development related challenges including those related to educational reform and development. Nevertheless many countries in the world lag behind in order to implement full ICT in their educational system.

Rights and Responsibilities of ICT's in education:

In India, the implementation and the use of ICT in education often lags behind other social and economic spheres, including communications, employment and commerce. Infact in many countries in the world children and youth learn more about how to use various ICT tools informally outside of the school system. Nevertheless, as the integration of ICT in education rises and participation and transition rates to higher levels of education increase, children and adults will increasingly need to acquire different forms of digital literacy beyond basic computer skills to participate in several of life's spheres. Learners will need to develop digital literacy, not only for its own sake but also to support their education throughout secondary, post- secondary and tertiary level. The early integration of ICT into primary and secondary curricula through formal recommendations is therefore vital and moreover acts as an important lever for ensuring the introduction and implementation of ICT into educational institutions classrooms.

However ICT can be used more intensively in various sectors. Its link to local good governance can best be illustrated by the expansion of educational services of distance learning and of cultural activities, by job incentives, by the expansion of judicial services and the control of justice, by increasing citizenship, public safety, human rights and more interaction with authorities. ICT can be very useful for interacting with the legislatures obtaining information on legislative operation-norms, rights, monitoring of legislative proposal, actions pressuring the legislature and contacts with representatives, ICT and can be used for rendering service to the public, such as obtaining general certificates, personal documents, identity, commercial information, transfers, contracts, deaths, notary information or facilitating the payment of taxes and dues.

Improving the quality of education and training is a critical issue, particularly at a time of education expansion. ICT can enhance the quality of education in several ways like, increasing learner motivation and engagement, facilitating the acquisition of basic skills and by enhancing teacher training. ICT's are also transformational tools when used appropriately can promote the shift to a learner-centered environment. ICT's such as Videos, T.V, and multimedia, computer software that combine text, sound, and colorful moving images can be used to provide challenging and authentic content that will engage the student in the learning process. The teachers strongly felt that visual oral combination if integrated judiciously with the text book and syllabus can wonders in getting across abstract concepts and logics to the children in a short span of time. The potential of each technology varies according to

how it is used.

In addition to targeted teaching of basic computer skills (or computing), ICT can also be used to teach other subjects to enhance student learning while providing additional learning opportunities about using ICT tools themselves. National policies and plans may be very explicit about recommendations for ICT -assisted instruction focusing only on certain subjects and / or at certain levels, while other countries may have a more generalized and comprehensive set of recommendations for ICT -assisted instructions to be implemented across the entire national curriculum at all levels of education. India, a country that extends the use of ICT in all areas of the curriculum and at all levels, states in its educational policy that since meaningful learning takes place within contexts in which students are familiar, it is vital that learning experience associated with ICT should not be isolated from other studies, but rather the knowledge, skill and values associated with computer use need to be integrated into all subject areas.

At the institutional level, ICT assisted instruction is dependent upon the availability of proper infrastructure, i.e. installation and maintenance of electricity and telephone communication facilities, acquisition and maintenance of computers and internet connectivity. However, the instructional strategies and technologies employed by countries are just as influenced by national priorities and policies on the use of ICT in education, in addition to financial resources. Human resources also play an important role since teachers and other educational personal need to use ICT effectively and impart knowledge and skill to pupils. Implementation plans need to evaluate current needs and future goals and ensure that adequate training and support are provided. The ICT -in - education toolkit (<http://www.ictinedtoolkit.org/user/login.php>) is an online tool that can help policy makers to plan during various phases of ICT in educational initiatives (Haddad etal, 2007).

Conclusion :

More than ever, the advent of the knowledge economy and global economic competition compel governments to priorities educational quality, lifelong learning and provision of equal opportunity for all. Education policy makers widely accept that improved access to ICT in education can help individuals to compete in a global economy by creating a skilled work force and facilitating social mobility. They emphasized that ICT in education has a multiplier effect throughout the education system, by enhancing learning and providing students new set of skills, by reaching students poor or no access (especially those in rural and remote regions), by facilitating and improving the training of teachers, and by minimizing costs associated with the delivery of instruction.

Beyond the rhetoric and of equal if not greater importance to policy makers, are basic questions about the role that ICT plays in basic educational outcomes, including retention and learning achievement. There are those that argue that ICT's are merely a delivery mechanism for teaching and learning, while it is the foundational pedagogy which matters. Others however contended that computers and other ICT's may possess properties or affordances that can directly change the nature of teaching and learning. For instance, it is believed that ICT can help to bring abstract concepts to life using images, sounds, movements, animations, and simulations.

The challenges brought about by ICT integration revolve on the question of how to allow the advancement of different segments of society towards innovation and the adoption of new technologies in order to improve government process and to reduce economic and social disparities. It is necessary to define public policies which are capable of boosting ICT use which itself contributing to

social inclusion, the expansion of human freedom, and the reduction of the digital divides. One thing is sure; the problem is less of a technical or economic nature, but more on the side of political will and the desire for equality. In any case, a better understanding of ICT's and their impact on student's outcomes are priorities in all countries, regardless of level of economic development.

References :

- Bikas C. Sanyal, (2001). New functions of higher education & ICT to achieve for all. International institute for educational planning, UNESCO (2001).
- Bob Kerry et al, (2008). The power of internet for learning: moving from power to practice.
- Honan, E, (2008). Barriers to teachers using digital texts in literacy classrooms. Literacy, vol-2, PP, 36-43.
- Mrs. Swati Desai, (2010). Role of information communication technologies in education. Proceedings of 4th national conference, INDIA com-2010.
- Reid,S, (2002). The integration of ICT into classroom teaching. Alberta journal of educational research. Vol-48, PP 30-46.
- Ron oliver, Australia (2007). The role of ICT in higher education for the 21st century: ICT as a change agent for education.
- Sharma Pual, (2009). Approach to ICT in education & technology: issues & challenges. ICAL, poster paper, (2009).
- Shiksha sammelan, kolkatta, (2009). ICT for quality education. Vikramshila education resource society.

संगीत का रूपायन-लघु चित्रण परम्परा

डॉ. एडलिन अब्राहम*

आलेख सार

“भारतीय ललित कलाओं का उद्देश्य-परमानन्द की अनुभूति एवं पंच ललित कलाओं का पारस्परिक एकत्व बिन्दु है।”

चित्रकला में सबसे अधिक महत्व रंगों को दिया जाता है, क्योंकि मनुष्य की दृष्टि रंगीन वस्तुओं पर सबसे पहले जाती है। प्रारंभिक काल में फूल-पत्तियों व पत्थर इन सबसे रंग की खोज हुई होगी और मनुष्य ने अपनी मौलिक कल्पना से इनके विविध प्रयोग किए। यही कारण है कि चित्रकला विभिन्न कालखण्डों रंगों की विभिन्नता के साथ बदलती रही। मानसिक स्थितिनुसार भिन्न-भिन्न भावों को प्रकट करने में विभिन्न रंगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यही कारण है कि आदिम गुहावासियों से लेकर समकालीन चित्रकार तक सभी रंगों का आश्रय, लेकर आत्माभिव्यक्ति करते आए हैं।

कला एवं धर्म का स्रोत एक ही है, सदैव से कला धर्म की सहचरी रही है – वही मध्यकाल में धार्मिक आन्दोलन चले, जिसमें काव्य एवं साहित्य की अदभुत भूमिका रही। कला कलान्तर में कथा, कहानी व गीत आदि के आधार पर चित्र रचना की जाने लगी। इसका सबसे अच्छा उदाहरण जयदेव कृत गीत गोविन्द रचना है, इसका लघु चित्रांकन किया। रीति परम्परा के प्रवर्तक केशवदास की रसिक प्रिया के आधार पर अनेकानेक चित्र कल्पनाएँ प्राप्त हैं। राग आधारित चित्रण रागमाला का इतिहास पुराना है, राग रागिनियों के आधार पर लघु चित्रण परम्परा को प्रस्तुत किया है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के नाते सदैव इस प्रयत्न में रहा है, कि वह अपनी अनुभूतियों, भावनाओं, तथा इच्छाओं को दूसरों से व्यक्त कर सके और दूसरों की अनुभूतियों से लाभ उठा सके। इसके लिये यह आवश्यकता पड़ी, कि वह अपने को व्यक्त करने के साधनों तथा माध्यमों की खोज तथा निर्माण करे। इसी के फलस्वरूप भाषा की उत्पत्ति हुई और काव्य संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला इत्यादि कलाओं का प्रादुर्भाव हुआ। ये सभी हमारी भावनाओं को व्यक्त करने के माध्यम हैं। भाषा की सबसे बड़ी विशेषता सार्वभौमिकता होती है। जिससे समाज का प्रत्येक व्यक्ति सामंजस्य स्थापित करता है। कला का रूप और उसकी भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सर्वग्राह्य हो सके।

कला की अभिव्यक्ति की प्रबल इच्छा और जीवन के क्षणों को रंगों में बाँधने के प्रयास ने लघु चित्रण को जन्म दिया। लघु चित्रण, विभिन्न रंगों का प्रयोग करते हुए जटिल विवरण का लघु रूप में रंगों के माध्यम से प्रस्तुत (चित्रित) करने की असाधारण कला है। अपने विशुद्ध विवरण चमकदार रंग आकृति संयोजन के कारण ही ये चित्र श्रृंखला विश्व में विभिन्न संग्राहलयों में शोभायमान हैं।¹

रंग अनेक भावनाओं का पुँज है। रंगों के अनूठे संसार की अपनी भाषा होती है, रंग शब्दों, वस्तुओं को, अर्थ प्रदान

*सहायक प्राध्यापक, श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कालेज महानद्दा, जबलपुर (म.प्र.)

कर उन्हें प्रतिबिम्बित करते हैं। रंगों के द्वारा ही शब्दों को गुण या भावों को आसानी से समझा जा सकता है। रंग अपने आप में अनेक अर्थों को समाये रखता है। रंगों के अभाव में चित्रकला का अस्तित्व धूमिल अथवा समाप्त हो जाता है। संगीत-कला एवं चित्रकला की अन्तरात्मा एक ही है। संगीत सूक्ष्म एवं निराकार कला है और चित्रकला रूप प्रधान एवं साकार। इसी कारण चित्रकला संगीत को साकार रूप प्रदान करने का सर्वश्रेष्ठ तथा सहज माध्यम सिद्ध हुई है। चित्रकला व संगीत का यह पारस्परिक गठबन्धन है।

संगीत सम्बंधी (आधारित) चित्र रचना 15 वीं -16 वीं शताब्दी से प्रारम्भ मानी जाती है। 17 वीं -18 वीं शताब्दी में राजस्थान की शैली व उपशैलियों के अंतर्गत इन चित्रों का प्रचार-प्रसार हुआ। चित्र और संगीत के तात्विक अन्वेषण की एक सुदीर्घ परम्परा हमें इन रागमाला चित्रण से हमें प्राप्त होती है।

मध्यकालीन लोक भावना का प्रतिनिधित्व करते हैं जो भक्ति, धर्म, साहित्य, चित्रकला व संगीत पर आधारित सांस्कृतिक पक्षों को प्रस्तुत व प्रेरित करती है।

राग के स्वरों के साथ प्रायः संगीत में प्रयुक्त रसों का संबंध माना जाता है और इन्हीं स्वरों के भाव के आधार पर ही रंगों का संबंध प्रस्थापित किया जाता है। प्राचीन महर्षियों ने स्वरों के गुणों का एवं भावों को भली-भाँति देकर ही उनका वर्ण आदि का वर्णन किया है। हर स्वर का एक विशिष्ट रंग बताया गया है। तरंगों और ध्वनि का निकट का सम्बन्ध है। ध्वनि तरंग प्रकट होते ही एक प्रकार के रंग नजर के सामने आते हैं।

चित्रकला में सबसे अधिक महत्व रंगों को दिया जाता है। क्योंकि मनुष्य की दृष्टि रंगीन वस्तुओं पर सबसे पहले जाती है। प्रारंभिक काल में फूल-पत्तियों व पत्थर इन सबसे रंग की खोज हुई होगी और मनुष्य ने अपनी मौलिक कल्पना से इनके विविध प्रयोग किए। यही कारण है कि चित्रकला विभिन्न कालखण्डों में रंगों की विभिन्नता के साथ बदलती रही। मानसिक स्थिति अनुसार भिन्न-भिन्न भावों को प्रकट करने में विभिन्न रंगों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यही कारण है कि आदिम गुहावासियों से लेकर समकालीन चित्रकार तक सभी रंगों का आश्रय, लेकर आत्माभिव्यक्ति करते आए हैं।²

मुगलकाल में चित्रकला के साथ-साथ संगीत की भी अभूतपूर्व उन्नति हुई। 1570 ई. में क्षेमकरण ने रागमाला नामक ग्रन्थ लिखा। 1610 में सोमनाथ ने 'राग विमोघ' लिखा। 15 वीं शताब्दी में दामोदर मिश्र ने संगीत दर्पण नामक ग्रन्थ की रचना की जिसमें संगीत शास्त्र में शिवमत की स्थापना मानी जाती है। इन्होंने मूल छः राग और छत्तीस रागनियाँ मानी और उनका समय निश्चित किया।

मध्यकालीन भारतीय चित्रण परम्परा में हमें रीतिकालीन साहित्य एवं काव्य का आधार स्पष्ट दिखाई देता है। जयदेव कृत 'गीत-गोविन्द' प्रेमकाव्य के रूप में अप्रतिम कृति है। गीत-गोविन्द काव्याधारित अनेक अभिव्यक्तियों मध्यकाल में चित्रकारों ने हमें दी है। अवधी भाषा में मुल्लादाऊद द्वारा लिखित 'लोरचन्दा' में प्रेमगाथा के अनेक चित्रात्मक स्वरूप हैं। रीति परम्परा के प्रवर्तक केशवदास की 'रसिक प्रिया' के आधार पर मुगल एवं पहाड़ी शैली में अनेकानेक चित्रकल्पनाएँ प्राप्त हैं।

'बिहारी सतसई' तथा अन्य ब्रजभाषा काव्यों के आधार पर 18वीं शती ई. में चित्रकारों ने नायक-नायिका चित्रण में प्रकृति और मानव की चेतना, अपरिमित सौन्दर्य और प्रेम का प्रवाह आदि प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

संस्कृत साहित्य में प्रकृति विषयक वर्णन अत्याधिक प्राप्त होता है। कालीदास द्वारा लिखित रचना 'मेघदूत' में वियोग एवं श्रृंगार को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया। चित्रकारों ने उसे रंगों, रेखाओं और प्रतीकों के आधार पर साकार कर दिया। 'बारहमासा' तथा षड्ऋतु वर्णन प्रकृति और मनुष्य के रहस्यात्मक संवादों को मूर्त करते हैं। यद्यपि रागमाला चित्रण में भी हम मनुष्य एवं प्रकृति, वियोग, श्रृंगार आदि (ऋतुओं) का सम्मिलित प्रभाव देखते हैं फिर भी संगीत के व्यावहारिक और सैद्धांतिक तर्कों को रागमाला चित्रों में देखा जाता रहा है। रागों की बानगी, अंतर्ध्वनि तथा स्वरों और शब्दों के बोध रूप एवं रागाधारित चित्रों का नामकरण रागमाला चित्रों में हमें सांगीतिक अनुभव से जोड़ता है।³

प्रत्येक राग अपने आप में नायक नायिका के रूप सौन्दर्य और अलंकरण के रंगों के साथ वातावरण एवं उनके आसनों तक का वर्णन है। चित्रकार ने इन रागों को चित्रित किया है और प्रत्येक राग के अनुसार सम्पूर्ण रागमाला चित्रित की गई है।

रागमाला की विषय वस्तु में संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार के सर्वाधिक चित्रण प्राप्त हुये हैं।

विरहणी नायिका - वियोगी श्रृंगार इस भाव के अंतर्गत प्रणय संदेश की प्रतीक्षा में कमल की पंखुरियाँ चुनती हुई (मालश्री) पति का रूप चित्र अंकित करती (धन श्री रागिनी) वन में भटकती हिरणों से घिरी (तोड़ी) पति के सुरक्षित लौटने की कामना से शिव आराधना में लीन (भैरवी) पार्वती सृष्ट्य तपस्विनी बनी नायिका (देव गंधार) आदि अपने वियोग के क्षणों को प्रकट करती है। इनका चित्रांकन राग सादृश्य वातावरण रंग संयोजन काल अवधि आदि का चित्रांकन राग माला चित्रों में देखने को मिलता है।

रागमाला चित्रण में संयोग श्रृंगार नायक जब घर लौट के आता है तब पहले तो नायिका उससे रूठने का प्रयास करती है। विलास के लिए अनिच्छुक नायक के तन पर प्रणय चिन्ह देखकर नायिका प्रतिक्रिया करती है (राग रामकली) नृत्य करके पति (नायक) को रिझाती (वसन्त मेघ मल्हार) हिन्दोले पर झूलकर (हिण्डोल) संगीत गोष्ठी का आयोजन (श्रीमालकौंस) प्रणय पर्व की तैयारी (बैरागी, मालवी, दीपक) और पुनर्मिलन तथा उषाकाल का आगमन एवं रति क्रीड़ा का अंत (विभास) संयोग श्रृंगार में परिलक्षित होता है।⁴

मारवाड चित्रशैली में ढोला मारू, रामकृष्ण सम्बंधी कथाएँ शिवपुराण के आख्यान, नायक नायिकाएँ, राग-रागिनी, नाथ पंथ व सामाजिक जन जीवन सम्बंधी अनेक चित्र चित्रित किये गये हैं।⁵

नगर निगम इलाहाबाद से संग्रहित है रागरानी, नायक नायिका, बारहमासा, दरबार दृश्य रीति कालीन साहित्य पर यहाँ के चित्रकारों ने चित्रमाला चित्रित की है।⁶

अलवर शैली में भी यही प्रवृत्ति दृष्टव्य है राग रागिनी और बारहमासा पर आधारित चित्रण किया है।⁷

बीकानेरी चित्र शैली में रसिक प्रिया रागमाला श्रृंगारिक आख्यान आदि प्रिय विषयवस्तु रही है। यहाँ गोल- मेघ मालाओं में सारस मिथुनो पक्षियों को बिजली की कौंध के साथ चित्रित किया गया है व नीले आकाश के ऊपर मेघों की गोल झालर बन जाती है।⁸ बुंदी शैली में प्रारम्भिक लघु चित्रों में दीपक राग भारत कला भवन तथा भैरवी राग चित्रण नगर निगम संग्रहालय, इलाहाबाद में रखी है।

देशकाल की अनुरूपता में राजस्थानी चित्रशैली में नायक नायिका चित्रण नायिका भेद अभिसारिका (श्रृंगार कर लुक छुप कर पिया मिलन को जाती हुई) उत्कण्ठिका (सेज अथवा मिलन स्थल को पुष्प या पत्तों से सजाये प्रतिक्षा में) स्वाधीन पति का नायक नायिका का श्रृंगार करते हुये, मुग्धा आदि नायिका भेदों को चित्रित किया। बारह मासों के चित्रों में फाल्गुन, चैत्र, बैसाख, जेठ, आषाढ़, सावन, भादो आदि महीनों के प्राकृतिक सौन्दर्य से दुखी या सुखी नायिका के मानसिक भावों का स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत किया है।⁹

पहाड़ी शैली में भी काव्य संगीत आधारित लघु चित्र परम्परा देखने को मिलती है इसमें बसोहली शैली जयदेव कृत "गीत गोविन्द" "मिलन की बेला" 1730 में बसोहली शैली में बना चित्र विचारणीय है। काव्य आधारित चित्र रचना की परम्परा राजस्थानी के साथ ही मुगल चित्रों में भी यह परम्परा अकबर के शासन काल में बहुतायत में देखने मिलती है। हिन्दु धर्म ग्रन्थों का चित्रमय फारसी में अनुवाद किया गया। यहाँ भी चित्रफलक लघु रूप में देखने को मिलती है। बसोहली में रसमंजरी, रामायण, भागवत पुराण, रसमंजरी बारामासा व राग रागिनियों के अनेक चित्र बसोहली चित्रकारों ने बनाये है।

गुलेर में गीत गोविन्द का चित्र "कृष्ण गोपियों को आलिंगन में लेते हुये" जो एन सी मेहता संग्रहालय, बम्बई के संग्रह में है। गुलेर शैली में राग रागिनी चित्रण का अभाव है। राजा महाराजाओं का संगीत प्रेम ने दरबारी संगीत की उन्नति हवेलियों में संगीत परम्परा तत्कालीन जनमानस में धर्म व संगीत के प्रति विशेष लगाव, राग रागिनियों के चित्रण में प्रत्येक राग के पढ़ने वाले मानसिक प्रभावों को नायक नायिका व रंग संयोजन के माध्यम से दिखाया गया है। प्रत्येक राग के गायन समय प्रातः, संध्या, रात्रि का विशेष ध्यान रखते हुये रंगों का चयन व आकृतियों का संयोजन अपने आप में अद्वितीय है। यथा राग मल्हार में मेघों का रूप, राग भैरव में सूर्य उदय की लालिमा का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। इसी प्रकार अन्य राग रागिनियों के चित्र देश विदेश संग्रहालय में रखे हैं, जो हमारी सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर का प्रतिनिधित्व करती है।

इसमें चित्रकार की अपनी सोच का कोई स्थान नहीं है, अपितु रागों में वर्णित सभी आधारभूत अथवा मूल तत्वों का पालन किया गया है। न कि स्वयं का रंग संयोजन यथा - राग भैरवी में रागिनी का स्वरूप इस रागिनी में गौरवर्ण युवती को श्वेत ओढ़ना, लाल कंचुकी तथा सुनहरा घाघरा धारण किए हुए शिव को ताल बजाकर प्रसन्न करने में रत है।

मालकोश रागिनी का स्वरूप (गुनकली) - यह विरहिणी नायिका मैले वस्त्र पहने अपने प्राणप्रिय पति की अनुस्थिति में विरह-व्यथा से क्षीण कर्दंब के नीचे भवन की अटारी के आगे आसन बिछाए बैठी हुई है। पास ही एक सखी क्षुब्ध नायिका को धैर्य बँधाती हुई दिखाई गई है। श्रृंगार रंस संयोग व वियोग का भावपूर्ण चित्रण किया गया है। एक विरहणी की मनोदशा रंगों और प्रतीकों के माध्यम से भली भाँति चित्रित की गई है।¹⁰

भारतीय चित्रकला के इतिहास में राग मालाओं और बारहमासा (बारहमासा चित्रण में फाल्गुन, चैत्र, बैसाख, आषाढ़, सावन, भादो आदि बारह महिनों के प्रकृति के बदलते सौन्दर्य का चित्रण किया जाता है।) के चित्रण में राजपूत शैली का महत्वपूर्ण योगदान है। यहाँ की सभी शैलियाँ यथा मेवाड़, मारवाड़ी, हड़ौती, दुदाड़ी शैली एवं इनकी उप शैलियों में लगभग सभी में बारहमासा व राग रागिनियों का चित्रण किया गया है।

मेवाड़ चित्र शैली के चितरे साहबदीन द्वारा चित्रित राग माला के बारह चित्र ही उपलब्ध है जो राष्ट्रीय संग्रहालय नई

दिल्ली, भारत कला भवन, वाराणसी और बोस्टन संग्राहलय अमेरिका में प्रदर्शित है।¹¹ इसी तरह मारवाड़ शैली में ढोला मारू, राम व कृष्ण सम्बंधी कथाएं, शिव पुराण आख्यान माला, राग रागिनी व सामाजिक जनजीवन सम्बंधी चित्रण किया गया है। इसी तरह बूंदी शैली में भी राग रागिनी बारह मासा व अन्य सामाजिक विषयों के अतिरिक्त मध्यकालीन साहित्य को अपने चित्रों की विषय वस्तु बनाया। जयपुर के जैक पैलिस से प्राप्त साहबदीन द्वारा चित्रित रागमाला (प्रायः 1650) राष्ट्रीय संग्राहलय, नई दिल्ली में है और बसंत रागिनी इसका प्रसिद्ध चित्र है।¹²

संगीत के रागों की रागिनियाँ तो हर काल में एक ही हैं, चित्रण में समरस्ता नहीं है, विभिन्न शैलियों के भिन्न-भिन्न चित्रकारों द्वारा भिन्न-भिन्न सृजन काल इसका प्रमुख कारण है, परन्तु यह चित्रण विषय वस्तु को प्रभावित किये बिना हुआ है यही वजह है कि आज भी यह चित्र देश विदेश की विभिन्न चित्रशालाओं में सुसज्जित है।

रागमाला चित्रों की समस्त श्रृंखला को वास्तव में संगीत की अपेक्षा रंगों की कला कहा जाना चाहिए, क्योंकि चित्रकार ने विभिन्न रंगों से भावगत स्थिति को दर्शाया है प्राथमिक रंगों को इतने संतुलित ढंग से चित्रण किया है कि कुछ सीमित रंग योजना में विशाल मनोभावों को प्रदर्शित करने में सक्षम हैं। एम.एस. रंधावा ने रंग योजना के विषय में लिखा है- कि “यह रंग योजना प्रतीकात्मक और आध्यात्मिक है जिसका सीधा संबंध भारतीय चित्रण की प्रारंभिक शैलियों से जुड़ा है।”

आज के दौर में कला के क्षेत्र में अनेको अनेक माध्यम, तकनीक व उपकरण मौजूद हैं जिनकी सहायता से विभिन्न प्रकार के चित्र बनाये जा रहे हैं, जो आज भी इन लघु चित्रों के आगे कमतर ही आँके जाते हैं। राजस्थानी व पहाड़ी शैली की चित्र परम्परा को राजआश्रित लघु चित्रण कलाकारों के वंशज इस शैली को आगे बढ़ाने में तत्पर हो सृजन कार्य कर रहे हैं। जिसमें अब प्राकृतिक रंगों का अभाव तो है परन्तु उनका सौन्दर्य और सुगंध वही पुरानी वाली है। कुछ एक कलाकार प्राकृतिक रंगों का उपयोग कर चित्रण कर रहे हैं।

आज की कला (मध्यकालीन) का रसास्वादन सौन्दर्य बोध की पुरानी अवधारणा से नहीं किया जा सकता, आज की कला सामाजिक, राजनीतिक और इससे अधिक आर्थिक परिवेश से प्रभावित हैं। कलाकार में अनुसंधान एवं प्रयोग की लालसा सदैव बनी रहती है जो कलाकार को लीक से हटकर चित्रण करने को प्रोत्साहित करती है। वहीं कुछ एक युवा चित्रकार हैं जो इस लघु चित्रण शैली को परम्परागत विधि से चित्रण कर रहे हैं। तो दूसरी तरफ विषय वही संवेदना वही माध्यम आधुनिक हो गये हैं यथा प्राकृतिक रंग से चित्रण न करके उपलब्ध रंग यथा जल रंग ऐक्रेलिक अथवा तेल रंगों का उपयोग कर चित्रण कर रहे हैं पर भावना वही है अपनी धार्मिक सांस्कृतिक एवं कलात्मक धरोहर को भावी पीढ़ी तक पहुँचाना अनवरत इस धारा को प्रवाहित करना है। इसी तारतम्य में कुछ एक युवा चित्रकारों के नामों का उल्लेख करना समाचीन है। जैसे श्री शरद भारती प्राचीन रीतिगत चित्रों का जीर्णोद्धार तथा पारम्परिक रंग निर्माण में सतत गतिशील। श्री पवन कुमार कुमावत, किशनगढ़ शैली में लघु चित्रण को कायम रखते हुये अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त कलाकार। श्री अंशु मोहन, पहाड़ी शैली में लघु चित्रण करने वाले परम्परागत परिवार में जन्में अपने परिवार की चित्रशैली में ही चित्रण करते हैं उन्हें अनेक पुरस्कार एवं सम्मान से नवाजा गया है। इनके अतिरिक्त अन्य परम्परागत परिवारों से आये चित्रकार अपनी पुरानी परम्परा को जीवित रखने में चित्रण कर सहयोग प्रदान कर रहे हैं, जो भावी पीढ़ी के लिये धरोहर साबित होगी।

भारतीय कला धर्म से अनुप्राणित रही है, - कला एवं धर्म का स्रोत एक ही है। यदि कला का आकर्षण धर्म के प्रति

न होता तो धर्म कब का निर्जीव और नीरस होकर अब तक तो मिट ही गया होता। निःसदेह धर्म ने कला को गौरव प्रदान किया और कला ने धर्म को सौन्दर्य दिया।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. मध्योत्तरी कला संगम, पृ. 69
2. भारतीय चित्रकला का विवेचन, आर. एन अग्रवाल, पृ.106
3. भारतीय चित्रकला का विवेचन, आर.एन. अग्रवाल, पृ. 109
4. पोरवाल टीना चित्रकला की भाषा : रंग, रेखा एवं रूप शा. म. ल. बा. क. महा इन्दौर
5. जैतली डॉ. अजय रागमाला चित्रण काव्य- संगीत का मानवीय अनुभव लोक कला व संस्कृति की तिमाही मध्योत्तरी कला संगम शरड अंक, 2011 पृ. 68
6. अग्रवाल आर.ए., भारतीय चित्रकला का विवेचन, पृ. 116,
7. अग्रवाल आर.ए., भारतीय चित्रकला का विवेचन, पृ. 126
8. भारतीय चित्रकला का विवेचन, आर. एन अग्रवाल, पृ. 114
9. भारतीय चित्रकला का विवेचन, आर. एन अग्रवाल, पृ. 128
10. वर्मा, प्रो. विनीता संगीत की राग रागिनियों का रंगों द्वारा मनभावन चित्रण, म.ल.वा.शा. कन्या महा., इन्दौर पृ. 51
11. अग्रवाल, आर.ए., भारतीय चित्रकला का विवेचन, पृ. 96
12. अग्रवाल, आर.ए., भारतीय चित्रकला का विवेचन, पृ. 106

संगीत का मानव जीवन पर प्रभाव

‘स-उत्तम’

‘गीत-गायन’

श्रीमती दीपमाला देशराज*

आलेख सार

जीवन - पथ के किसी भी मोड़ पर रुक कर देख लीजिए वही आपको संगीत मिलेगा। दुख से, सुख से, रूदन से, हास से, योग से, वियोग से, मृत्यु से, जीवन से सारांश यह है कि जीवन की प्रत्येक अवस्था से येन-केन-प्रकारेण संगीत की कड़ी अवश्य जुड़ी रहती है। संगीत से मानव मस्तिष्क का सन्तुलन भी ठीक रहता है तथा कार्य करने की क्षमता को भी बढ़ाता है। इसके अलावा निर्णय करने की वृद्धि और उत्तमता की परख का अनुभव होता है।

उत्तम गायन को हम संगीत कहते हैं। यह एक ललित कला है जिसका मुख्य आधार नाद अथवा आवाज है। इस कला में स्वरों का ऐसा सम्मिश्रण होता है जो कलाकार की हृदय की भावनाओं को मधुर बनाकर वह दूसरे के साथ रंजन हेतु प्रस्तुत करता है। इसलिए संगीत को हृदय की भाषा तथा सु-हृदयगत् भावनाओं को प्रकट करने की भाषा कहते हैं। जो सुसंस्कृत होती है एवं वह अन्तर आत्मा का उत्थान कर उसे कलात्मक आनंद का स्वरूप प्रदान करती है। दूसरा इसे सौन्दर्य का साकार तथा सजीव प्रदर्शन माना जाता है। यह प्राणि मात्र के लिए अमृत रस है जो आत्मा को परमात्मा तक पहुँचाती है। इस प्रकार यह एक सर्वश्रेष्ठ साधन है।

संगीत के अन्तर्गत गायन, वादन एवं नृत्य इन तीनों कलाओं का समावेश है। जो क्रमशः ही महत्वपूर्ण हैं इनमें गायन श्रेष्ठ है। इसके अधीन वादन एवं वादन के अधीन नृत्य माना गया है। इस प्रकार गायन, वादन, नृत्य के मिश्रण को हम संगीत कहते हैं। जीवन -ग्रंथ के पृष्ठों को कहीं से भी पलटिए कोई भी अध्याय तो ऐसा नहीं जिसे संगीत से शून्य कह दिया जाए। युगसृष्टा मानव ने जन्म लेते ही गीत सुने और मृत्यु होने पर भी गीत सुनते-सुनते उसने शमशान की यात्रा की ! घंटे-घड़ियाल और राम-नाम सत्य है? की ध्वनियों के साथ उनका स्थूल शरीर भी शून्य में खो गया।

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा।

पंच रचित यह अधम शरीरा।।

इन्हीं पाँच तत्वों से मिलकर मानव-शरीर का निर्माण होता है और यही तत्व जीवन के आधार माने गए हैं। यही पाँच तत्व प्रकृति का आधार माने जाते हैं। जड़ और चेतन की सृष्टि का अस्तित्व इन्हीं पर निर्भर है।

संगीत का प्रभाव -

बच्चे तथा बड़े सभी संगीत से प्रेम करते हैं क्योंकि उनके मन को संगीत भाता है एवं मन प्रसन्न होता है जैसे-छोटे-छोटे बच्चों को जब उनकी माँ लोरी (एक विशेष गायन जो माताएँ अपने बच्चों को बहलाने हेतु) सुनाती है गाना एक धुन

*सहायक प्राध्यापक (संगीत अनुदेशक), सेंट पॉल्स कॉलेज, जबलपुर, मध्यप्रदेश

में संगीत भय तथा थपकी देकर तालमय सुनाती है तो बच्चा मुग्ध होकर सुनता है प्रसन्न होता है एवं रोना व बैचेनी भूल जाता है। वह अपने अंगों को शिथिल कर देता व गाने के ध्यान में खोकर इतना मस्त हो जाता है कि थोड़ी देर बाद उसे निद्रा आ जाती है।

पावस की लाजवती संध्याओं को श्वेत-श्याम मेघ-मालाओं से प्रस्फुटित नन्ही-नन्हीं बूँदों को रिमझिम-रिमझिम राग सुनते ही कोयल कूक उठती है। पपीहे गा उठते हैं। मोर नाचने लगते हैं। मोर नाचने लगते हैं तथा मँजीरे बोल उठते हैं। लहलहाते हरे-भरे खेतों को देखकर कृषक आनंद-विभोर हो जाता है और वह अनायास ही आलाप उठाता है किसी परिचित मल्हार के बोल। यह वह समय होता है जब प्रकृति के कण-कण में संगीत की सजीवता आभासित होती है। इन चेतनामय घड़ियों के प्रत्येक जीवधारी पर संगीत की मादकता का व्यापक प्रभाव पड़ता है। संगीत हमारा मूढ़ बदलकर स्ट्रेस लेवल को कम करता है। संगीत का असर हमारे शरीर और मन दोनों पर ही होता है। आजकल अस्पतालों में भी म्यूजिक को बढ़ावा दिया जा रहा है। संगीत से मरीज को स्वस्थ होने में भी कम समय लगता है। संगीत हमारी आत्मा को भी एक अनोखा सुकून देता है और संगीत सुनने से तनाव भी कम होता है। हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग तरीके का संगीत सुकून देने वाला हो सकता है। जिस तरह का संगीत हमें सुनना पसन्द होता है वह हमारा मनोरंजन करता है। लेकिन उस प्रकार का संगीत जिसे हम नहीं पसन्द करते हैं उसको सुनने से तनाव बढ़ भी सकता है।

डॉ. सिंह ने दस वर्ष तक एक बाग को दो हिस्सों में बाँटकर एक परीक्षण किया। एक हिस्से के पौधों को कु. स्टैला पुनैना वायलिन बजाकर गीत सुनाती दूसरे को खाद पानी धूप की सुविधायें तो सामान रूप से दी गईं किन्तु उन्हें स्वर-माधुर्य से वंचित रखकर दोनों का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिस भाग को संगीत सुनने को मिला उनके फूल पौधे सीधे बने अधिक फूल फलदार सुन्दर हुए, उनके फूल अधिक दिन तक रहे और बीज निर्माण द्रुतगति से हुआ।

संगीत से लाभ -

पढ़ाई के दौरान बच्चों को गणित के सवाल करते करते तथा अन्य विषयों के पाठ याद करते करते एवं बहुत सा इतिहास लिखते-लिखते वे थक जाते हैं तथा इसके बाद वह बहुत थकान महसूस करते हैं इससे उनके मस्तिष्क पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ता है जबकि संगीत (लोरी के समान) मधुर धुन व ताल के आनन्द से उनके मस्तिष्क को एक नई स्फूर्ति मिलती है। विचारों में प्रगाढ़ता आती है एवं स्नायु तन्तुओं में स्फूर्ति उत्पन्न होती है। उनकी कल्पना शक्ति बढ़ती है। फेफड़े मजबूत होते हैं। स्वर लिपि को देखने से व गायन वादन से उनके नेत्रों की ज्योति बढ़ती है। संगीत साधना करते करते उनमें सतर्कता आ जाती है। उनके मस्तिष्क का अच्छा विकास होता है। सामूहिक गान और वृन्द वादन से दूसरों के साथ मिलकर चलने की क्षमता बढ़ती है इसके अलावा आत्मिक सुख प्राप्त होता है।

इसके अलावा निर्णय करने की वृद्धि और उत्तमता की परख का अनुभव होता है। नाद के उतार चढ़ाव से सुनने की शक्ति बढ़ती एवं गायन से कंठ लचीला और वाणी में बोलने गाने हेतु माधुर्य आ जाता है। प्रसन्नता की बात है कि आजकल विश्व के कुछ विशेषज्ञ एवं डॉक्टर संगीत के रहस्यपूर्ण तत्वों के अनुसंधान में संलग्न हैं। आजकल के परीक्षणों में अनेक ऐसी चमत्कारपूर्ण बातें मिली हैं। अगर आपके दिमाग पर तनाव हावी रहता है तो रात में राग दरबारी का लुत्फ उठाइए, तनाव छूमंतर हो जाएगा। दोपहर में राग भीमपलासी सुनना भी दिमाग को शांत रखने, तनाव को कम करने में मददगार होता है। यही नहीं डायबिटीज या दिल से जुड़ी कोई बीमारी है तो भी अलग-अलग राग इन बीमारियों से लड़ने में आपकी मदद कर सकते हैं। अलग-अलग राग का इंसान के दिलो-दिमाग पर पड़ने वाले इन अवसरों पर आईआईटी- कानपुर ने अध्ययन किया है। उसी अध्ययन से ये नतीजे निकले। ये भी निष्कर्ष निकला कि अगर आपको बात-बात पर गुस्सा आ जाता है, तो

राग सहाना सुनि। दिमाग शांत होगा, गुस्सा कम होगा। पेट से जुड़ी कोई समस्या है तो राग पूरिया धनाश्री, एसिडिटी है तो राग दीपक और राग जौनपुरी सुनना चाहिए। हृदय रोग है तो सारंग वर्ग के राग, ए कल्याणी और चारुकेसी। सिरदर्द है तो राग आसावरी, ए पूर्वी और राग तोड़ी सुन सकते हैं। आईआईटी में मस्तिष्क के न्यूरोन्स और नर्वस सिस्टम पर राग-रागनियों से होने वाले असर पर शोध किया जा रहा है। ब्रूमैनिटीज एंड सोशल साइंस के प्रोफेसर बृजभूषण, इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रो. लक्ष्मीधर बेहरा और शोधार्थी आशीष गुप्ता इस रिसर्च टीम में शामिल हैं। इंस्टीट्यूट के ही कुछ ऐसे छात्रों पर शोध किया गया, जिन्होंने पहले कभी राग दरबारी नहीं सुना था। 10 मिनट तक उन्हें राग सुनाया गया। फिर इन छात्रों का ईईजी टेस्ट हुआ। तीन चरणों में आई रिपोर्ट की ग्राफिकल मैपिंग की गई। पता चला कि राग सुनने के दौरान महज 100 सेकंड में ही दिमाग के न्यूरोन्स की सक्रियता बढ़ जाती है। यह स्थिति राग सुनने के बाद करीब 10 मिनट तक बनी रहती है।

प्रो. बेहरा बताते हैं कि राग सुनने पर न्यूरोन्स के बीच न्यूरल फायरिंग होती है। जब एक न्यूरोन दूसरे को करंट सप्लाई करता है, तो उसे न्यूरल फायरिंग कहते हैं। यही न्यूरोन्स की सक्रियता को भी दर्शाता है। थोड़ी देर ही राग को सुनने पर यह गतिविधि चरम पर पहुंच जाती है, जिसकी वजह से दिमाग शरीर के अलग-अलग अंगों को संदेश भेजता है।

जिनके द्वारा अनुसंधानकर्ताओं का उत्साह बढ़ता ही चला जा रहा है। मानसिक रोगों पर पक्षाघात अथवा फालिज की बीमारी पर संगीत की स्वर-लहरियों ने आशातीत लाभ किया है। आस्ट्रेलिया के बुम्बीज (एक प्रकार के जंगली घोड़े) संगीत की सहायता से भारी संख्या में पालतू बन गए हैं। लंदन के एक अस्पताल में गूँगे-बहरे तथा पागलों पर किए जाने वाले संगीत के प्रयोगों में अच्छी खासी सफलता प्राप्त हुई है। इटली की कुमारी ऐलबोल लोरा के प्रति भारतीय एवं कुछ विदेशी समाचार-पत्रों ने इस प्रकार के समाचार प्रकाशित किए थे। जिन्हें पढ़कर बरबस ही संगीत के चमत्कार को नमस्कार करना पड़ता है। पत्रों का कथन था कि यह कुमारी भोजन नहीं करती, वह केवल संगीत पर ही जीवित रहती है।

अनुसंधान के वर्तमान युग में वह दिन अधिक दूर नहीं जबकि विज्ञान-वेत्ताओं द्वारा संगीत की छिपी हुई अनंत शक्ति का भंडार सर्वसाधारण के समक्ष प्रकट हो जाएगा और मानव-जीवन के सृजनात्मक कार्यों में इसके तत्वों का अधिकाधिक प्रयोग होगा। तब हमारा मानव-समाज जीवन और संगीत के संबंधों को और भी अधिक स्पष्ट रूप में समझ सकेगा ऐसी आशा की जाती है।

ललित कलाओं में संगीत का स्थान -

मानव सभ्यता के साथ-साथ ही विभिन्न कलाओं का विकास हुआ है। 64 कलाओं में-संगीत कला, चित्र-कला और काव्य कला विशेष महत्व रखती हैं। इनमें भी संगीत-कला अधिक प्रभाव डालने वाली कला है। मनुष्य के हृदय में सोए हुए भावों को जगाने में संगीत जितना सक्षम है उतनी और कोई विद्या नहीं। जो कुछ चित्र से नहीं कहा जा सकता वह काव्य या भाषा से कह दिया जाता है और जिन भावों को व्यक्त करने में भाषा भी असमर्थ रहती है उन्हें संगीत के जरिए आसानी से समझा जा सकता है। लॉटरी खुलने की प्रसन्नता न भाषा से व्यक्त की जा सकती है और न चित्र से। उसकी अभिव्यक्ति नाचने-कूदने और उन्मत्त-गान से ही संभव है। इसी प्रकार पुत्र-शोक, प्रिय-विछोह और समर्पण इत्यादि के भाव संगीत के द्वारा शीघ्र जाग्रत हो जाते हैं।

संगीत से सच्चा सुख -

आधुनिक युग में हमें विज्ञान के द्वारा अनेक उन्नति व सुख की चीजें प्राप्त हो रही हैं। जो केवल एक भौतिक आनंद की अनुभूति देती है। परन्तु मनुष्य नित्य दौड़-धूप में तीव्र गति से अपने जीवन में और अधिक सुख की प्राप्ति के लिए आत्मिक-सुख-चैन से वंचित हो रहा है। मन में अशान्ति है, दिमाग में उलझन है और शरीर में भी कष्ट हो रहा है। अतः एक

मात्र संगीत ही हमारे जीवन में आनंद व सुख की सच्ची अनुभूति पैदा करता है जो सत्य है।

जीवन-पथ के किसी भी मोड़ पर रुक कर देख लीजिए वही आपको संगीत मिलेगा। दुख से सुख से, रूदन से हास्य से, योग से वियोग से, मृत्यु से जीवन से। सारांश यह है कि जीवन की प्रत्येक अवस्था से येन-केन-प्रकारेण संगीत की कड़ी अवश्य जुड़ी रहती हैं। युद्ध के मोर्चों पर उत्साह-वृद्धि के लिए वर्तमान युग में भी विश्व के प्रत्येक राष्ट्र के सैनिक विभिन्न प्रकार के संगीत का ही प्रयोग करते हैं। अट्टहास करती हुई मृत्यु के उस वीभत्स वातावरण में सैनिकों के मस्तिष्क का सन्तुलन ठीक रखने एवं गगनभेदी तोपों के भयावने गर्जन में कर्तव्य की कसौटी पर खरे उतरने की शक्ति संगीत ही प्रदान करता है।

सन्दर्भ ग्रंथ -

- कुमार, बसंत - 'संगीत विशारद', संगीत कार्यालय हाथरस, उत्तरप्रदेश, मुद्रण वर्ष 2013, नवीन संस्करण पृष्ठ क्रमांक 524-526, 560.
- दिनांक 3-12-2018 दैनिक भास्कर के पृष्ठ 01 पर प्रकाशित 'लेख-राग दरबारी और भीमपलासी सुनिए, गुस्सा, तनाव कम होगा'।

कार्यालयीन कार्यविधि-प्रयोजन मूलक हिन्दी

डॉ. कैरोलिन सेनी*

शोध सार

कार्यालयीन कार्यविधि - प्रयोजनमूलक हिन्दी ये शोधपत्र प्रयोजनमूलक हिन्दी विषय को पूर्णतः प्रायोगिक बनाने लिखा गया है। यह पाठ्यक्रम बी.ए. और एम.ए. में एक विषय के रूप में रखा गया है। किन्तु इसके प्रयोग के अनेक क्षेत्र हैं। जिससे कक्षाओं में ही प्रायोगिक कार्य किये जा सकते हैं। कार्यालयीन पत्र जो कार्यालय में कार्य करते समय कार्यालयीन कार्यविधि से अभ्यास द्वारा सीखी जा सकती हैं, चाहे आप अधिकारी बने या लिपिक अथवा निजी व्यापार करें, आफिस के दस्तावेजों को रिकार्ड में रखना, पत्रों के उत्तर कैसे देना है इस संदर्भ में इस शोधपत्र में प्रायोगिक विधियों से अवगत कराये बिना किसी संस्था में अध्ययन के बिना भी इसकी अवश्यकता को समझ सकते हैं। अवगत कराने और जिज्ञासा और रुचि रखने का प्रयास किया गया है।

इस शोधपत्र का उद्देश्य प्रयोजनमूलक हिन्दी में,

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी कला संकाय के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक व्याख्यान नहीं अपितु प्रायोगिक कार्य भी करने का अवसर है।
2. दिमाग पर बोझ कम डालना पड़ता है।
3. मस्तिष्क के साथ हाथ भी काम करता है।
4. शिक्षा के दौरान प्रशिक्षण प्राप्त कर लेते हैं।
5. रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त हो जाते हैं।

परिकल्पना

प्रयोजनमूलक हिन्दी पाठ्यक्रम एक व्यावसायिक पाठ्यक्रम है और टंकण कम्प्यूटर, प्रारूपण, टिप्पण, पत्राचार व्यावसायिक पत्र प्रतिवेदन और प्रशासनिक शब्दावलिओं, पदबंधों का प्रयोग करना सीखा जाता है और जिससे चाहे आफिसर बनें या क्लर्क आफिस की कार्यक्षमता एवं गौरव को प्रभावित करते हैं।

शोध की समस्या

विज्ञान के क्षेत्र में तकनीकी ज्ञान की कमी नहीं है, परन्तु कला संकाय के क्षेत्र में प्रायोगिक कार्य के कम होने से फील्ड वर्क दिये जाते हैं यह पाठ्यक्रम के माध्यम से कार्यालय कार्यविधि प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वरोजगार, सरकारी नौकरी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा।

समाज और राष्ट्र के लिए उपयोग

मानव जब समाज से मुखातिब होता है उससे सीखकर वह जीविकोपार्जन के लिए राष्ट्र के उपलब्ध संसाधनों का

*विभागाध्यक्ष, हिंदी संकाय, संत अलायसियस कालेज, जबलपुर (म.प्र.)

उपयोग कर अपना लक्ष्य पूर्ण करता है। जिसमें वह अनुवाद के माध्यम से साहित्य और संस्कृति का प्रसार करता है। राजभाषा अधिकारी का पद, आकाशवाणी और दूरदर्शन, समाचार पत्रों, विज्ञापन के राष्ट्रीय सेवाओं से जुड़ने के अवसर कश्मीर से कन्याकुमारी और द्वारका से पुरी तक की सामाजिक संस्कृति के विभिन्न भाषाओं के माध्यम से व्यक्त है, क्योंकि इसमें राष्ट्रीय स्तर के संवाददाता, उद्घोषक, फीचर लेखक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अपना स्थान बनाकर अजीविका प्राप्त करते हैं।

1975-76 के आसपास तात्कालीन राजभाषा सचिव डॉ. रामाप्रसन्न नायक आई सी. एस. ने कहा था - भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों में सिर्फ साहित्यिक भाषा के रूप में नहीं बल्कि प्रयोजनमूलक भाषा के रूप में हिन्दी का अध्ययन अध्यापन किया जाये। कई विश्वविद्यालयों में हिन्दी में टिप्पण, आलेखन, पूफ रीडिंग, टाईपिंग आदि की शिक्षा प्रदान की जाती है। शिक्षा को रोजगारमूलक बनाने की आवश्यकता को देखकर 1994-95 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने स्नातक स्तरीय तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रयोजनमूलक हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में रखा है। इस पाठ्यक्रम में राजभाषा नीति नियमों, सरकार द्वारा विभिन्न आदेशों, अनुदेशों के अतिरिक्त, बैंकों, रेलों, दूरदर्शन, आकाशवाणी, व्यावसायिक पत्र के अतिरिक्त बैंक, रेलवे दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि में हिन्दी प्रयोग को दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त रोजगार के क्षेत्र में अनुवाद की माँग को भी रखा गया है। इसलिए इस पाठ्यक्रम को शुरू किया गया है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी एक ऐसा विषय है जिसे कला संकाय के छात्र-छात्रायें प्रायोगिक कार्य प्रशिक्षण से होकर एक रोजगार की ओर बढ़ते हैं ताकि वे सैद्धांतिक कक्षाओं के साथ ही जीविका उपार्जन के साधनों को निर्धारित कर सकते हैं। यू.जी.सी. ने जब प्रयोजनमूलक हिन्दी पाठ्यक्रम प्रारंभ किया था तब प्राध्यापकों को कक्षा शिक्षण का प्रशिक्षण दिया था और अनेक प्रारूप भी प्रदान किये गये जिससे वे किसी अलग लैब में नहीं कक्षा में ही इसके प्रयोग क्षेत्र को स्पष्ट कर सकें।

प्रयोजनमूलक हिन्दी महिलाओं में भी एक तकनीकी सोच और दिशा दे रही है। कार्यालयीन कार्यविधि के चलते वह संचार क्रांति के युग में चलना प्रारंभ कर चुकी है कार्यालय सहायक के रूप में पत्रों को छाँटना, उत्तर लिखना और भेजना होता है। टेलीफोन और ई-मेल के सिवाय प्रतिदिन कार्यालय में आये पत्रों का लेखा या रिकार्ड रखना होता है प्रत्येक आवृत्ति का उत्तर देना पड़ता है, फाईल में भी नथ्थी करना पड़ता है। यह कार्यालय की दैनिक प्रक्रिया है। इसमें जैसे ही अंतिम निपटान प्रारंभ होता है। इसके निपटान के लिए समय समय पर अभियुक्तियां लिखी जाती हैं। इन्हें टिप्पणी कहते हैं। टिप्पणियों पर आदेश प्राप्त कर तदानुसार कार्य किया जाता है। टिप्पणी की अभियुक्तियां हैं, जो किसी विचाराधीन विषय के संबंध में लिखी जाती हैं, जिस पर निर्णय करना होता है। उन बातों की और संकेत किया जाता है

जैसे -

लेखन में आदेश के लिए प्रस्तुत है।

उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।

प्रस्ताव स्पष्ट है, इसे मान लिया जाये। रिकार्ड कर दिया जाये।

प्रयोजनमूलक हिन्दी आधुनिक भाषा विज्ञान के अनुप्रयुक्त (Applied Linguistic) स्वरूप के अन्तर्गत अत्याधुनिक उपशाखा के रूप में विकसित हुई है। प्रयोजनमूलक हिन्दी एक पारिभाषिक शब्द है जो भाषा की अनुप्रयुक्तता और प्रायोगिकता के निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किया गया है। जीवन की विविध आवश्यकताओं में प्रयोग में लाई जाने वाली भाषा है। यह साहित्यिक हिन्दी से सर्वथा भिन्न है अतः उसे इस प्रकार से लिखा जाता है।

कृपया पिछली टिप्पणी देख लें,
 कृपया पावती भेजिए।
 जरूरी कार्यवाही कर दी गई है।
 महानिदेशक कृपया अनुमोदन के लिए देखें।
 नई आवती सूचना के लिए देख लें।
 प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है।
 देखकर सहधन्यवाद वापस किया जाता है।
 संबंधित मिसिल (फाइल) नीचे रखी है।
 हम मुख्य इंजीनियर के दूसरे पत्र की प्रतीक्षा कर लें।
 इस फाईल का निपटारा शीघ्र कर लिया जायेगा।

उपरोक्त पदबंधों का प्रयोग कार्यालयीन कार्यों में किया जाता है। सरकारी पत्र व्यवहार के अनेक रूप हैं कहीं अर्धसरकारी पत्र लिखा जाता है तो कहीं ज्ञापन से सूचना मंगाई जाती है तो कहीं सरकारी निर्णय की सूचना कार्यालय ज्ञापन द्वारा की जा सकती है। विदेशी सरकारों, राज्य सरकार, सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों और संघ लोक सेवा आयोग जैसे अन्य कार्यालयों में समस्त और व्यावहारिक पत्र व्यवहार के लिए इसका सरनामा में भारत सरकार और संबंधित मंत्रालय का नाम होता है। पत्रादि की संख्या और तारीख, पत्र पाने वाले का नाम और या पदनाम, विषय, संबोधन पत्र का मुख्य कलेवर अधोलेख, भेजने वाले के हस्ताक्षर और उसका पदनाम।

सरकारी अधिकारियों को लिखे जाने वाले पत्रों का आरम्भ 'महोदय' और गैरसरकारी व्यक्तियों या व्यक्तियों के पत्रों को लिखे जाने वाले पत्रों में प्रिय महोदय के सम्बोधन होते हैं।

सभी सरकारी पत्रों के अंत में अधोलेख के रूप में 'भवदीय' लिखना चाहिए और उसके बाद हस्ताक्षरकर्ता का नाम दिया जाता है, जो पत्र व्यवहार के निर्देश पर नहीं बल्कि किसी अधिकारी द्वारा अपने अधिकार पर लिखे जा सकते हैं। इसकी भाषा शैली इस प्रकार है -

“मुझे निर्देश हुआ है कि” के सिवाये मुझे निवेदन करना चाहिए लिखना चाहिए। भारत सरकार के आपसी पत्राचार के लिये कार्यालय ज्ञापन का प्रयोग अधीनस्थ कार्यालयों द्वारा अधिकारियों को ऐसी सूचना देने के लिये होता है जो सरकारी आदेश के समान नहीं होता है।

अर्धसरकारी पत्र का प्रयोग सरकारी अधिकारियों के आपसी पत्र व्यवहार में विचारों या सूचनाओं के आदान प्रदान के लिए किया जाता है। किसी अधिकारी का ध्यान व्यक्तिगत रूप से किसी मामले की ओर दिखाना हो या जब किसी अधिकारी का ध्यान किसी अधिकारी द्वारा व्यक्तिगत रूप से किसी मामले की ओर दिलाना हो। जिस पर कार्यवाई होने में बहुत देर हो चुकी हो और सरकार की ओर से अनुस्मारक भेजने पर भी उपयुक्त जवाब न मिला हो।

अशासनिक पत्राचार दो तरीके से किया जाता है। मिसिल पर टिप्पणी लिखकर उसी को मंत्रालय/कार्यालय भेजकर

अपने आप में पूर्ण टिप्पणी भेजकर। इस तरीके का प्रयोग आम तौर पर मंत्रालयों के विचार, टीका-टिप्पणी आदि प्राप्त करने के लिए मौजूदा अनुदेशों का स्पष्टीकरण आदि कराने के लिए कोई कागज मंगवाने के लिये पृष्ठांकन का प्रयोग किया जाता है। इस तरीके का प्रयोग आमतौर पर मंत्रालयों के विचार, टीका टिप्पणी आदि प्राप्त करने के लिए मौजूदा अनुदेशों का स्पष्टीकरण आदि कराने के लिए कोई कागज मंगवाने के लिये पृष्ठांकन का प्रयोग तब किया जाता है। इस स्थिति में पृष्ठांकन का रूप निम्नलिखित में से कोई एक हो सकता है।

..... को एक प्रति (जिस पत्र का उत्तर है उसकी प्रति के साथ में सूचना / सूचना और संदर्शन) आवश्यक कार्यवाई/ उत्तर शीघ्र अनुपालन के लिए भेजी जा रही है।

प्रशासनिक मंत्रालयों द्वारा जारी की गई वित्तीय स्वीकृतियों की नकले भी जिन्हें वित्त मंत्रालयों द्वारा लेखा परीक्षण अधिकारियों के पास भेजना हो। यही पृष्ठांकन लेखन की भाषा है।

अधिसूचना नियमों और आदेशों की घोषणा अधिकारों का सौंपा जाना, राजपत्रित अधिकारियों की नियुक्ति, छुट्टी, तरक्की आदि को भारत के राजपत्रों (गजट आफ इंडिया) में प्रकाशित करके अधिसूचित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। संकल्प का प्रयोग नीति के महत्वपूर्ण मामलों पर सरकार के निर्णयों, समितियों या जांच आयोग की नियुक्ति और उनकी महत्वपूर्ण रिपोर्ट की समीक्षा के परिणामों की सार्वजनिक घोषणा के लिए होता है।

प्रेस विज्ञापित और प्रेस नोट का लेखन सरकार के किसी निर्णय का बहुत अधिक प्रसार करने के लिए किया जाता है। प्रेस नोट से प्रेस विज्ञापित ज्यादा औपचारिक होती है। तार सिर्फ बहुत जरूरी मौकों पर भेजे जाते हैं। कुछ प्रतियाँ डाक से भेजी जाती हैं। तुरंत पत्र की भाषा तार की सी होनी चाहिए और पाने वाले को भी उतनी ही प्राथमिकता देना चाहिए।

कार्यालय में आवेदक द्वारा भी कार्यालयीन भाषा में अभियुक्तियां लिखी जाती हैं।

1.पद पर नियुक्त होने के पश्चात् मेरा वेतनरुपये नियत किया गया है परन्तु मूल नियम.....के अनुसार वह वेतन..... रुपये के वेतन मान Pay Scale में रुपये नियत होना चाहिए था। निवेदन है कि मामले पर पुनर्विचार करके मेरा वेतन सही रूप में नियत करने की कृपा करें।
2. मुझेके निरीक्षण के लिए दौरे पर कलकत्ता जाने का आदेश हुआ है। मार्ग व्यय आदि के लिए कृप्या.....रु. अग्रिम धन देने की व्यवस्था करें।
3. मैं दिनांकसेतक..... दिन की अर्जित छुट्टी पर था, छुट्टी की समाप्ति पर आज मैंने कार्यालय में अपना काम संभाल लिया काम के लिये कार्यालय में उपस्थित हूँ।
4. कार्यसूची (ऐजेण्डा) के कागजपत्र नहीं आए जल्दी कीजिये।
5. आपको आठ और नौ फरवरी की विभागीय परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जाती है। स्टाफ का वेतन शीघ्र भेजिएके लिए आपके प्रस्ताव अनुमोदित कार्य तुरन्त शुरू कर दें।
6. श्रीअधीक्षक का त्यागपत्र 1 जुलाई अपराह्न से स्वीकृत।

सरकारी तारों में बहुधा काम आने वाले शब्द आगमन तिथि Date of arrival, day and night, बार-बार by goods train मालगाड़ी के द्वारा In due course यथा संभव In order to merit योग्यताक्रम, As long as जब तक Time

scale समयमान Please inform whether Shri..... Admitted to training Course The draft has not been issued प्रारूप को जारी करने की आवश्यकता नहीं।

प्रयोजनमूलक हिन्दी अध्ययन का अन्य क्षेत्र है पारिभाषिक शब्दावली।

पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग-क्षेत्र व्यापक है वाणिज्य व्यावसायिक, विज्ञान, दर्शन के क्षेत्र में इनका प्रयोग किया जाता है पर यहाँ पर कार्यालय में उपयोग आने वाली शब्दावली में अंतरिम उत्तर / Inter Departmental Note अन्तर्विभागीय टीप। Most Urgent अति तुरंत Immediate तत्काल, पदनाम Designation समयमान, Standard Draft मानक मसौदा, राजपत्र Gazette संकल्प Resolution स्वतः स्पष्ट।

छुट्टी लेने या छुट्टी बढ़ाने का आवेदन पत्र

1. आवेदक का नाम
2. पदनाम
3. कार्यालय का नाम
4. वेतन
5. वर्तमान पद पर मिलने वाला मंहगाई भत्ता

मकान किराया भत्ता

तथा अन्य प्रतिपूरक भत्ते

किस प्रकार की छुट्टी

कितनी अवधि के लिए

किस तारीख को चाहिए

शनिवार, रविवार तथा अन्य

राजपत्रित छुट्टियाँ यदि कोई हो

छुट्टी लेने का कारण

पिछली छुट्टी से लौटने की तारीख

वह किस प्रकार की थी।

छुट्टी के दौरान तथा ब्लाक वर्ग के लिए छुट्टी यात्रा रियायत भत्ता लेना चाहता हूँ/ नहीं लेना चाहता।

छुट्टी के दौरान पता।

त्यागपत्र देने अथवा स्वेच्छा से सेवा निवृत्त होने की स्थिति में निम्नलिखित राशि लौटाने का वचन देता/देती हूँ।

परिवर्तित छुट्टी में दिये गए वेतन तथा अर्धवेतन का अन्तर, जो नियत 30 के उपनियम 1 के लागू न होने पर

देय नहीं होता।

छुट्टी के दौरान लिया गया वेतन जो नियम 31 के उपनियम 1 के लागू न होने पर देय न होता।

आवेदक के हस्ताक्षर

तारीख

नियंत्रक की अभ्युक्ति / सिफारिश

छुट्टी अनुपयुक्त का प्रमाणपत्र

(राजपत्रित अधिकारी के लिए लेखा परीक्षा अधिकारी द्वारा)

प्रमाणित किया जाता है कि दिनांक से दिनांक तक के दिन का अर्जित/ परिवर्तित/अर्धवेतन, अवकाश केन्द्रीय सिविल सेवा नियमावली 1972 के अधीन स्वीकार्य है।

हस्ताक्षर (तारीख सहित)

पदनाम

कार्यालय अधीक्षक

इस बहुमुखी संसार में अनुवाद सेतु का काम करता है। यदि अनुवाद की व्यवस्था न होती तो विश्व के विभिन्न भागों की अलग अलग सभ्यता, संस्कृति और उनके साहित्य से लोग परिचित न होते। कई बार अनुवाद मूल अनुवाद कृति से भी ज्यादा रोचक और मौलिक बन जाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद में सृजनात्मकता और रचनात्मकता होती है। प्रयोजनमूलक हिन्दी में बोलचाल की हिन्दी व्यापार एवं वाणिज्य सरकारी कार्यालयों, अदालतों, कल कारखानों, सामाजिक संस्थाओं आदि की भाषा के रूप में एक शब्दावली का विकास हुआ। इन दायित्वों को निभाने के लिये जहाँ सरकारी कार्यालयों, बैंकों, सामाजिक उद्यमों प्रचार माध्यमों में बड़े पैमाने पर अनुवादकों की नियुक्ति की गई, निजी तौर पर अनुवाद करने वाले स्वतंत्र अनुवादकों, पूर्णकालिक पत्रकारों, विज्ञापन एजेंसियों में काम करने वाले लोगों, रेडियो और दूरदर्शन के लिए अनुवाद कर्मियों तथा खेलकूद के क्षेत्रों में हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान रखने वाले उद्घोषकों की आवश्यकता बढ़ी और रोजगार के क्षेत्र में अंग्रेजी भाषा का ज्ञान और हिन्दी का तथा प्रयोजनमूलक क्षेत्र में रोजगार के रूप में अनुवाद का विशिष्ट स्थान ग्रहण कर लिया है।

प्रशासन में, संसद और विधानमंडल में विधि केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों में तकनीकी क्षेत्र में अनुवादकों की संख्या बढ़ने लगी है।

साहित्य लेखन के क्षेत्र में भारत सरकार के गृह मंत्रालय, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो अनुवाद कार्य के अतिरिक्त सेवारत अनुवादकों को प्रशिक्षण भी देता है। दूतावासों के सांस्कृतिक केन्द्रों में भी अनुवादक एवं अनुवाद के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। पर्यटन एवं सिविल विमानन मंत्रालय और व्यापार संस्थान भी हाल में ही विदेशी भाषाओं में अंग्रेजी में अनुवाद, आशु अनुवाद के पाठ्यक्रम चला रहे हैं। अनुवाद की बढ़ती हुई मांग को ध्यान में रखकर यह आवश्यक प्रतीत होता है कि आशु अनुवाद के क्षेत्र में भी विज्ञान प्रशिक्षण का पृथक प्रबंध किया जाये।

बहुभाषिक समाज में साहित्यिक आदान-प्रदान का साधन होता है। इन्हें सम्पर्क सूत्र में बांधने और एकीकृत राष्ट्र के

रूप में संगठित करने के लिए अनुवाद आवश्यक होता है। आपने टेलीविजन पर मिले सुर मेरा तुम्हारा तो सुर बने हमारा सुना होगा। जो सभी भाषाओं में है। फिल्मों का भी रूपांतरण अन्य भाषाओं में अनुवाद किया जाता है।

अनुवाद एक भाषा के पाठ को दूसरी भाषा में अनुदित नहीं करता अपितु मूलतः और अंततः सांस्कृतिक कर्म भी है और सांस्कृतिक आदान प्रदान का सबसे सशक्त और कारगर माध्यम है।

प्रतिवेदन प्रयोजनमूलक हिन्दी का एक महत्वपूर्ण लेखन है जिसका आशय रिपोर्ट से भी लिया जाता है, पर यह प्रेस रिपोर्ट नहीं है न ही पुलिस की शिकायत अपितु यह किसी संस्था की प्रगति का लेखा जोखा है और घटना की जाँच के उपरांत तैयार किया गया है।

अतः हम कह सकते हैं कि प्रयोजनमूलक हिन्दी विषय रोजगार की समस्या का समाधान करने और हर वर्ग चाहे वह महिला हो, शाला का विद्यार्थी हो, स्नातक स्तर का हो, विश्वविद्यालय का हो या सरकारी कार्यालय का हो, व्यावसायी हो, बैंक कर्मी हो, बीमा अधिकारी हो या प्रशासनिक पद प्राप्त व्यक्तियों के ट्रेनिंग प्रोग्राम हो सभी को कार्यालयीन हिन्दी का ज्ञान प्राप्त करना होता है अतः यह राष्ट्रीय सेवाओं से जुड़ने का पूर्ण अवसर प्रदान करता है। राजभाषा अधिकारी का पद इसी आशय से सृजित किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ -

1. प्रशासनिक पत्राचार - केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा लेखक ठाकुरदास, कृष्णकुमार गोस्वामी
2. प्रशासनिक हिन्दी - हरिबाबू कंसल, राजस्वरूप राय, सूर्यनारायण सक्सेना
3. प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदरे
4. अनुवाद का सामाजिक संदर्भ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मानविकी विद्यापीठ

सामंतवाद

श्रीमती प्रतिभा पाण्डे*

आलेख सार

सामंतवाद भूमि-वितरण पर आधारित एक सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था थी। मध्यकालीन यूरोप में सामंतवाद अपने चरमोत्कर्ष पर था। यूरोप के प्रत्येक देश में इनका स्वरूप अलग-अलग था। सामंतवाद मध्यकालीन युग में इंग्लैंड और यूरोप की प्रथा थी। समाज का शक्तिशाली वर्ग कमजोर वर्ग के लोगों का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेता था तथा कमजोर वर्ग शक्तिशाली वर्ग की सेवा करना स्वीकार करता था। इन सामंतों की कई श्रेणियां थीं, जिनके शीर्ष स्थान में राजा होता था और सबसे निम्न स्तर में किसान या दास होते थे। यह रक्षक और अधीनस्थ लोगों का संगठन था। राजा समस्त भूमि का स्वामी माना जाता था। सामंतगण राजा के प्रति स्वामिभक्ति रखते थे। उसकी रक्षा के लिए सेना सुसज्जित करते थे और बदले में राजा से भूमि पाते थे। सामंतगण भूमि के क्रय-विक्रय के अधिकारी नहीं थे। प्रारम्भिक काल में सामंतवाद ने स्थानीय सुरक्षा, कृषि और न्याय की समुचित व्यवस्था करके समाज की प्रशंसनीय सेवा की।

प्रस्तुत आलेख देश के वर्तमान प्रजातांत्रिक स्वरूप को स्पष्ट करता है साथ 'नोटबंदी' की कार्यवाही की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है।

सामंतवाद का विकास यूरोप में पांचवी शताब्दी में प्रारम्भ हो गया था, परन्तु पूर्ण विकास नवीं सदी में हुआ। 15वीं सदी में यद्यपि यह पतन की ओर अग्रसर हो गया था, किन्तु यह लम्बे समय तक यूरोप में विद्यमान रहा। रोमन साम्राज्य के टूटने के बाद उस पर पश्चिमी यूरोप की असभ्य जातियां फ्रैंक लोम्बार्ड तथा गोथ इत्यादि ने अधिकार कर लिया। इन जातियों ने समाज और सरकार को नवीन रूप प्रदान किया। जर्मन की बर्बर जातियों के आक्रमण के कारण इटली के गांव असुरक्षित से हो गए थे, क्योंकि सरकार सुरक्षा करने में समर्थ नहीं थी जिसके परिणामस्वरूप जनता ने अपनी सुरक्षा के लिए शक्तिशाली वर्ग से समझौता किया। यही शक्तिशाली वर्ग आगे चलकर सामंतवाद के आधार बने।

ब्रिटेनिका के अनुसार -

“सामंतवाद के जन्म में सुरक्षा की भावना प्रधान थी। संभावित विदेशी आक्रमण तथा सरकारी अफसरों की अनियंत्रित मांगों से छुटकारा पाने के लिए एक ऐसी सत्ता की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी, जो उन्हें किसी भी कीमत पर सुरक्षा प्रदान कर सके।”

यूरोप में सामंतवाद के उदय के पीछे एक और महत्वपूर्ण कारण था सत्ता का विकेन्द्रीकरण। धीरे-धीरे जनता को सुरक्षा प्रदान करने वाला यह शक्तिशाली वर्ग अर्थात् सामंतवाद सम्पूर्ण यूरोप में फैल गया।

उसका केन्द्र कैरोलिंगियन साम्राज्य में था। दक्षिणी फ्रांस में सामंतवाद का प्रभाव स्पेन पर पड़ा। इस प्रकार सम्पूर्ण

*सहायक प्राध्यापक, एन.ई.एस. ऐजुकेशन कॉलेज, जबलपुर (म.प्र.)

यूरोप में एक नए ढंग की व्यवस्था का सूत्रपात हुआ और यही नई व्यवस्था सामंतवाद कहलायी जो लगभग आठवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक समस्त यूरोप में वैभवपूर्ण ढंग से छा गयी।

डॉ. रामशरण शर्मा के अनुसार -

“उनका राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचा भूमि अनुदानों के आधार पर गठित था और इस प्रथा के अधीन किसान भूमि से बंधे होते थे और भूमि के मालिक वे जमींदार होते थे जो असली काश्तकारों और राजा के बीच कड़ी का काम करते थे। इस आधार पर कृषि दासत्व एवं सैनिक संगठन दोनों सामंतवाद के मुख्य आधार हैं।” यूरोप में राज्य सेवा करने के पुरस्कार स्वरूप सामंतों को भूमि दी जाती थी और उन सामंतों की प्रशासनिक देख-रेख में जितना क्षेत्र होता था, उसका पूरा राजस्व उन्हीं को प्राप्त होता था। राजा अफसरों को नकद वेतन के बदले जमीन देता था। जमीन उन अन्य लोगों को भी दी जाती थी जिनको राजा पुरस्कृत करना चाहता था।

यूरोपीय सामंतवाद में किसानों को, जमींदारों या उन व्यक्तियों के लिए काम करना पड़ता था जिन्हें जमीन दे दी जाती थी और जो सामंती कहलाते थे। सामंतों का कर्तव्य राजा के लिए सैनिक एकत्र करना था। प्रो. सिजविक ने सामंतवाद को चार विभिन्न प्रवृत्तियों का परिणाम माना है। इस प्रकार सामंतवाद एक ऐसी प्रणाली है जिससे स्थानीय शासक उन शक्तियों का प्रयोग करते हैं राजा, सम्राट अथवा किसी केन्द्रीय शक्ति को प्राप्त होती थी। इस प्रथा के अंतर्गत राजा अपने अधीनस्थ भूमि को अपने वीर सैनिकों अथवा अन्य राज भक्तों में बांट देता था। ये व्यक्ति उस भूभाग के स्वामी बन जाते थे और इच्छानुसार किसानों से खेती करवाते थे और कर वसूलते थे।

मौलिक प्रवृत्तियों का विष्लेषण करते हुए श्री एच. एस. डेवीस ने कहा है कि “इस व्यवस्था के अंतर्गत व्यक्ति सुरक्षा के दृष्टिकोण से अपने प्रभु से अनुबन्धित होता था। वह अपने सामंती प्रभुत्व से पृथक् अपनी स्वतंत्र सत्ता की घोषणा नहीं कर सकता था। युद्ध सामंती व्यवस्था का प्रमुख सिद्धान्त था। भाई-भाई के विरुद्ध और पुत्र पिता के विरुद्ध लड़ने में कोई संकोच नहीं करता था। निम्न वर्ग की दशा सोचनीय थी।” सामंत राजा को सैनिक सहायता प्रदान करता था, राजा को महत्वपूर्ण परामर्श देकर राजा की मंत्रणा प्राप्त करने का अधिकारी था।

सामंतवाद के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बेक्सटर महोदय ने लिखा है कि “यह ऐसी राजनीतिक व्यवस्था थी जो राजा और सामंत के भूमि से सम्बन्धित पारस्परिक सम्बन्धों पर आधारित थी तथा जिसमें भूमि प्राप्तकर्ता द्वारा सेवा और आदर-भावना, स्वामित्व, सहायता, विवाह आदि की घटनाएं प्रमुख थी।”

“सामंतवाद शब्द यद्यपि समाज व्यवस्था का एक प्रकार है तथा मुख्य रूप से उन व्यक्ति सम्बन्धों की व्याख्या करता है जो जमीन के अधिकार और व्यक्तिगत सम्पत्ति के आधार पर एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति के प्रति अधीनता प्रकट करते हैं, तथापि यह व्यक्तिगत सम्बन्धों और नियमों की उस विशिष्ट पद्धति की ओर संकेत करता है जिसमें एक ओर सुरक्षा तथा दूसरी ओर सेवा तथा आज्ञा पालन है।” इस प्रकार सामंत के निर्वाह और सामंतवाद सामाजिक एवं आर्थिक विकास प्रक्रिया, सुरक्षा का उत्तरदायित्व प्रभु पर था। साथ ही सामंत प्रभु की आज्ञापालन और सेवा भक्ति से अनुबन्धित था। आज्ञा पालन न करने पर राजा केवल सैद्धान्तिक रूप में उससे भूमि वापस लेकर उसे पदच्युत कर सकता था। यह केवल प्रारंभिक सैद्धान्तिक स्वरूप था, किन्तु व्यावहारिक रूप में ऐसा नहीं होता था। कालांतर में यह व्यवस्था बदल गयी। “सामंती प्रथा

वंशानुगत थी। सामंत की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी उसका स्वामी बनाया जाता था, जो पहले राज्य दरबार में जाकर कुछ भेंट कर राजा के प्रति अपनी स्वामी भक्ति प्रगट किया करता था।'' इस प्रकार राजा द्वारा सामंत को और सामंत द्वारा अपने से नीचे सरदारों को भूमि प्रदान करना वंशानुगत हो गया और सामंतवाद के एक नये स्तर अर्थात् उपसामंतवाद का जन्म होने लगा। कृषकों का सम्बन्ध सीधे राजा से न होकर एक मध्यस्थ कुलीन उच्चवर्ग से होने लगा। यद्यपि मुद्रा का चलन पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ था किन्तु उसका प्रयोग बहुत कम होता था, धन के रूप में भूमि का प्रयोग किया जाता था। सामंती व्यवस्था का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सिद्धान्त आनुवंशिकता का था।

सामंतवाद का अर्थ -

सामंतवाद एक विशेष तरह की शासन प्रणाली थी जो कि मध्यकाल में यूरोप में पनपी। इस शासन प्रणाली में राजा के नीचे सामंत निर्धारित होते थे, तथा इन सामंतों का अपने-अपने क्षेत्रों की भूमि पर अधिकार होता था तथा इन सभी सामंतों की कुल भूमि को मिलाकर जो राज्य बनता था उस पर कानूनी अधिकार राजा के पास होता था। राजा के अधिकार वाली भूमि का सामंत अपनी संपत्ति की तरह प्रयोग करते थे तथा इसके बदले वे राजा को आर्थिक व सैन्य सहायता देते थे। जब भी राजा को कोई आवश्यकता पड़ती तो सामंत राजा के प्रति अपनी स्वामिभक्ति दिखाते हुए राजा की आर्थिक व सैन्य शक्ति के माध्यम से सहायता करते थे बदले में राजा के अधिकार में आने वाली भूमि पर कृषि कर सामंत अपना लाभ कमाते थे इस शासन व्यवस्था की सबसे बुरी बात यह थी कि कृषक व मजदूर वर्ग इस व्यवस्था के चलते सबसे अधिक पीड़ित थे। क्योंकि उसे राजा के साथ-साथ सामंतों के न्याय-अन्याय भी सहने पड़ते थे और इनका अपनी ही भूमि पर अपना कोई अधिकार नहीं था। कृषक व मजदूर सामंतों की भूमि पर ही कार्य करने हेतु मजबूर थे और उसमें से भी उन्हें सामंतों को कर देना पड़ता था क्योंकि सामंतवादी शासन व्यवस्था समाज को दो वर्गों में बांट रही थी एक पीड़ित और दूसरा शोषक। इसी कारण समय के साथ-साथ सामंत व्यक्तिगत रूप से स्वार्थी होते गए जिस कारण भविष्य में यह व्यवस्था ढगमगा गई और जब स्थानीय राजाओं की राजभक्ति से ऊपर उठकर राष्ट्रभक्ति का समय आया तो सामंतवादी व्यवस्था टिक न सकी तथा इसका अंत हो गया। सामंतवाद को अंग्रेजी में 'फ्यूडलिज्म' कहा जाता है।

सामंतवाद की परिभाषा -

सामंतवाद की परिभाषायें निम्न हैं -

डॉ. वीरोत्तम के अनुसार - "सामंतवाद वैयक्तिक शासन, एक विशिष्ट भूमि व्यवस्था और व्यक्तिगत निर्भयता का मिश्रित स्वरूप था।"

भारत में नव-सामंतवाद और काला धन -

भारत एक प्रजातंत्रिक देश है, परंतु यहां के लोगों की पसंद 'सामंतवाद' है। जो नेता प्रजातंत्रिक पद्धति से चुनकर विभिन्न सदनो में पहुँचते हैं उनकी सोच बहुत जल्द ही सामंती ढर्रे पर चली जाती है। धीरे-धीरे आम आदमी से दूरी बनाने लगते हैं। यही हाल अधिकारी लोगों का भी है। यह अभिजात्यवादी सोच ही आम आदमी को नेताओं और शासकों से दूर करता है। इसलिए भारत में प्रजातंत्रात्मक शासन के बावजूद भी शासन का अपने यहां एक अर्थ है- राजशाही, सामंतशाही। जहां एक गरीब व्यक्ति केवल शासित बनकर रह जाता है। इसे 'नवसामंतवाद' कहते हैं।

सामंतशाही की मूल विषयवस्तु है सत्ता यानी पावर। कुछ भी यानी मनमानी करने, दूसरों को कुचलते हुए शान से जीने का पावर। बड़े पदों से जुड़ा रहता है पावर। लेकिन पावर अपने आप में कोई एकांगी और निरपेक्ष अवधारणा नहीं है। पावर का रुपान्तरण कैसे में न हो तो वह किस काम के पावर से आप अपने अधीनस्थों को डरा सकते हैं, किन्तु पावर से आप बाजार में कुछ खरीद नहीं सकते। ऐसे दुकानदार से तो कतई नहीं खरीद सकते, जिसे आपका पावर होने या न होने से कोई फर्क पड़ता हो। इसलिए जो लोग पावर में होते हैं वे पावर और पैसे के दम पर अपना काम करा लेते हैं किन्तु जहाँ उनके अधिकार की आभा नहीं पहुंचती, वहाँ पर पैसों से अपना काम करवाते हैं। वे पैसे के पावर को जानते हैं और उसका बखूबी इस्तेमाल भी करते हैं। ऐसे पैसे को बाहर निकालने के लिए सरकार कुछ वैसे उपाय कर डालती है, जैसे वर्तमान में केन्द्र सरकार में किए।

एक दिन अचानक घोषणा होती है कि हजार और पांच सौ रुपये के नोट बाजार में हैं या सामंती सोच वाले पावरफुल लोगों के पास दबे हुए हैं, वे अब कागज के टुकड़े मात्र रह गये। यदि कोई उन नोटों को बदलना चाहे तो बदल ले, जमा करना चाहें तो बैंक में जमा करदे। लेकिन उसकी कुछ शर्तें हैं। विभिन्न दलों के नेता धन के लिए ही बड़ी नौकरी में आने वाले अधिकारीजन परेशान हो गए, जिनके पास बेहिसाब करेंसी हैं। ऐसी करेंसी जो कभी वैध मुद्रा होती थी, किन्तु अब नहीं रही।

जैसे किसी विषय पर नाग से उसकी मणि छीन ली जाए तो वह बौखला जाता है, उसी प्रकार वे धनहीन होकर बौखला गए थे। जो नेता अपने आप को आम जनता का प्रतिनिधि बतलाते थे, चुनाव के दिनों में कोई भी विचार किए बिना निःसंकोच भाव से सब के साथ बैठते थे, चुनाव जीतते ही 'सामंती' तेवर दिखाने लगते हैं। देश के कई राजनीतिक दल चुनाव के प्रचार-प्रसार में जिन प्रतीक चिन्हों को छपवाते हैं जिसका सम्बंध आम निम्न मध्यमवर्गीय समाज से नहीं, बल्कि मजदूर और किसानों से है। जैसे - हंसिया, हथौड़ा, साइकिल आदि चिन्ह। जो नेता इन प्रतीक चिन्हों पर चुनाव जीतते हैं, सत्ता पर काबिल होते हैं, उन्हें यह भी नहीं मालूम कि हंसिया, हथौड़ा में क्या अन्तर है। हंसिया का हमारे लोक जीवन में क्या महत्व है या हमारी कृषि व्यवस्था में क्या उपयोग है। देश में बहुत बड़ी संख्या उन लोगों की है जो महीने में 6 से 12 हजार कमा पाते हैं। यह वर्ग किसी तरह अपना जीवन यापन करता है। उसे न टैक्स भरना, न कालाधन जमा करना है बल्कि उसके पास जो दो चार नोट हजार और पांच सौ रुपये की शक्ल में हैं, उन्हें बदलने की मुश्किल आ गई।

देश के तंत्र का बहुत बड़ा हिस्सा घूसखोरी, बेईमानी के मकड़-जाल में उलझा हुआ है। केन्द्र सरकार ने इसे काटने की जो कोशिश की, वह काबिले-तारीफ है। कालेधन के बल पर कुछ लोग अपने आप को राजा समझते थे और आम नागरिक को दास।

प्रजातंत्र तभी सफल हो सकता है, जब उसमें हर व्यक्ति को बराबर के अवसर उपलब्ध हो। पाशिवक प्रवृत्तियों अथवा आपराधिक गतिविधियों के कारण लड़ने में अधिक सक्षम कुछ लोग जब समाज का सारा धन अपने कब्जे में कर लें, तो न्यायप्रिय और प्रजापालक सरकारें वही करेंगी, जो हमारी वर्तमान केन्द्र सरकार ने किया। देश में बढ़ रही 'सामंतशाही' और उसके फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले काले धन को जड़ से दूर करके प्रजातंत्र की पुनः प्रतिष्ठा के लिए किए गए स्तुत्य प्रयास की प्रशंसा जितनी भी की जाए कम है।

संदर्भ ग्रंथ :-

- सामंतवाद ब्राउन ए.आर एलिजाबेथ द्वारा इनसाइक्लोपीडीया ब्रिटैनिका ऑनलाइन।
- सामंतवाद हल्सल पॉल, के द्वारा सोर्सबुक इंटरनेट मध्यकालीन।
- बलोच, मार्क, सामंती समाज टिआर मान्यों ला दो खंड शिकागो, शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस, 1961 ISBN 0226-05979-0
- Readers Companion to military History". Archived from the original on 2004 -11-12
- मध्यकालीन सामंतवाद स्टेफेनसन कार्ल के द्वारा, क्लासिक सामंतवाद का परिचय।
- युद्ध में मानव सभ्यता, न्यूयॉर्क ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस 2006, 332-343
- मकदूनियाई ब्रिटानिका, 9th.ed. Vol. 9, p.119 ली सामंतवाद पशु लैटिन शब्द पुचुनिया जिसका मतलब है पैसा भी।
- कैंटर नोर्मन एफ मध्य युग की सभ्यता के 1994 बारहमासी हार्पर
- द पोवर्टी ऑफ फिलोसोफी 1847 अध्याय 2 के उद्धारण से लिया गया है।
- फिलिप दैलेअदर 'सामंतवाद' उच्च मध्ययुग।

EMERGING RESEARCH JOURNAL

A Multidisciplinary Peer Reviewed (Refereed/Juried) International Journal

SUBSCRIPTION FORM TEMPLATE

I wish to subscribe to Emerging Research Journal for [1] [2] [3] Year(s). A Bank D.D. Bearing No. Dated for Rs./\$ drawn in favour Of "JABALIPUR PUBLIC COLLEGE" payable at Jabalpur, towards subscription has been enclosed herewith.

Name :

Designation : Qualification :

Subscription Year : 1 Year [] 2 Years [] 3 Years []

Subscription Type : Individual [] Institutional []

Delivery Address :

Contact No. : E-mail :

SUBSCRIPTION RATES

DURATION	INDIVIDUAL	INSTITUTIONAL	ROW (USD)
One Year	Rs. 500	Rs. 600	\$ 50
Two Year	Rs. 900	Rs. 1100	\$ 75
Three Year	Rs. 1200	Rs. 1500	\$ 100

Note :

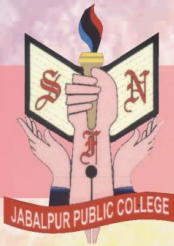
1. Subscriptions are available for a whole volume (June & Dec.) only.
2. No cancellations are permitted.
3. Claims for missing issues can be made only within 45 days of publication date.
4. All legal disputes subject to Jabalpur Jurisdiction only.

SUBSCRIPTION ADDRESS

Subscription Manager
Emerging Research Journal
Jabalpur Public College
49, Karmeta Patan Road, Jabalpur
Madhaya Pradesh Pin-482002
erj.jpc@gmail.com
Cont : 0761-2688838, 9425154312

Get it photocopied for more subscription





Since 1995

JABALPUR PUBLIC COLLEGE

Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur

RUN BY SHIV NARAYAN FOUNDATION

Shape your career with us

Facilities & Highlights

- Conference Hall
- Well Equipped Lab
- Library
- Wi-Fi Campus
- Canteen
- Career Guidance
- Sports & Games
- Campus Selection

- **D.El.Ed.**
- **B.Ed.**
- **M.Ed.**
- **B.A.B.Ed.**
- **D.C.A.**
- **P.G.D.C.A.**
- **Proposed
B.Ed.M.Ed.**



For More Information Contact

49, Karmeta, Patan Road, Ahead of Radio Station
Near MPSRTC Depott, Jabalpur (M.P.)

Ph. : 0761-2688838/9425154213/9826826822/9713561012

E-mail : erj.jpc@gmail.com

Website : www.erjjpc.org.in